तृतीय अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों के पात्र एवं चरित्र-चित्रण का अनुशीलन"

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

तृतीय अध्याय

"विवेच्य उपन्यासों के पात्र एवं चरित्र चित्रण का अनुशीलन"

विषय प्रवेश :

जयप्रकाश कर्दम हिंदी दलित साहित्य के साहित्यकारों में से एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इनके विवेच्य उपन्यास 'करुणा' तथा 'छप्पर' दलित जीवन की यथार्थता एवं मानवतावादी मूल्यों का दर्पण है। इन्होंने अपनी रचनाओं के कथ्य को अर्थ पूर्ण तथा सक्षम बनाने के लिए पात्रों का चयन तथा प्रस्तुतिकरण बड़ी गहराई के साथ पैनी दृष्टि से किया है। इनके विवेच्य उपन्यासों के पात्र सजीव, संघर्षशील, मर्यादाशील, प्रेरणादायी तथा समता, स्वतंत्रता, बंधुता इन मानवतावादी मूल्यों के गुणों से ओतप्रोत हैं। इन विवेच्य उपन्यासों के पात्र सामाजिक दायित्वबोध के निर्वाह में कर्तव्यदक्ष तथा सजग दृष्टिगोचर होते हैं। अत: इनका परिचयात्मक विवेचन तथा विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत हैं -

3.1 पात्र एवं चरित्र-चित्रण का स्वरूप एवं महत्त्व :

उपन्यास के तत्वों में पात्र चरित्र-चित्रण को महत्त्वपूर्ण पहलु के रूप में स्थानबद्ध किया है। किसी भी रचना के कथ्य को रोचक, आकर्षक एवं विश्वासनीय बनाने के लिए उसमें निहित पात्रों का नियोजित रूप रचनाकार के अप्रतिम क्षमता का द्योतक होता है। साहित्यिक कृतियों में कथ्य तथा पात्रों के गुण, रूप विशेषताओं का अटूट संबंध है। उपन्यास के कथ्य को गति देने का कार्य पात्र एवं चरित्र-चित्रण के द्वारा किया जाता है। रचनाओं में जो पात्र कथानक को गति प्रदान करते है तथा कथ्य के मूल प्रतिपाद्य को उद्घाटित करते हैं वे प्रधान पात्र के रूप में रहते हैं। तथा रचना के प्रधान पात्र के निश्चित उद्देश्य पूर्ति में सहायक पात्र साधन बनकर कार्यरत रहते हैं उन्हें गौण पात्र कहा जाता है। रचना को सफल पात्र-योजना से परिपूर्ण बनाने के लिए

आवश्यक तत्व इस प्रकार हैं -

1. पात्र वास्तविक तथा यथार्थ जीवन से संबंधित हो।
2. पात्र आदर्श को प्रस्तुत करने में सक्षम हो।
3. पात्र उसकी प्रवृत्ति के अनुसार गतिशील बने।
4. पात्र-योजना में अनुकूलता, सप्राणता, सहृदयता, मौलिकता, स्वाभाविक रूप में हो।

अर्थात श्रेष्ठ रचना की महत्ता उसमें निहित पात्रों के चरित्र-चित्रण की कुशलता तथा कलात्मकता से होती है। इसके बारे में डॉ.प्रतापनारायण टंडन जी का कथन द्रष्टव्य हैं कि "नवीन दृष्टिकोण को प्रधानता देनेवाले लेखकों ने कथानक की तुलना में चरित्र-चित्रण को अधिक महत्व दिया। चरित्र-चित्रण को उपन्यास का प्राण माना जाने लगा और चरित्र-चित्रण की कुशलता और कलात्मकता से ही उपन्यास का महत्व निर्धारित किया जाता है।"[1]

उपन्यास साहित्य में पात्रों के चरित्र-चित्रण के द्वारा उसके व्यक्तित्व के अंगों का परिक्षण निरीक्षण किया जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व के बारे में डॉ.शांतिस्वरूप गुप्त जी कहते है कि "किसी भी पात्र के व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं - "बाह्य पक्ष और आंतरिक पक्ष। बाह्य व्यक्तित्व के अंतर्गत उसका आकार, रूप, वेश-भूषा, आचरण का ढंग, बातचीत आदि आते हैं और आंतरिक पक्ष का संबंध उसकी मानसिक तथा बौद्धिक विशेषताओं से होता हैं।"[2]

अत: उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि उपन्यास के तत्वों में पात्र चरित्र-चित्रण को प्राण माना जाता है और उसकी कुशलता एवं कलात्मकता से उपन्यास की महत्ता बढ़ती है। रचनाकार चरित्र-चित्रण के माध्यम से मानवीय मन को स्पर्श करते हुए उसके आंतरिक तथा बाह्य भावों को उद्घाटित करता है।

3.2. 'करुणा' उपन्यास में चित्रित पात्रों का परिचयात्मक अनुशीलन :

जयप्रकाश कर्दम जी का 'करुणा' लघु उपन्यास है। इस उपन्यास का शीर्षक उपन्यास की नायिका 'करुणा' के नाम से जुड़ा हुआ है। यह उपन्याम लघु-उपन्यास होने से इसमें निहित पात्रों की संख्या मर्यादित है। इस उपन्यास के प्रधान पात्रों के रुप में 'करुणा' तथा रमेश ये दो पात्र दृष्टिगोचर हैं। तथा गौण पात्रों के रूप में ठाकुर सुखदेवसिंह, सूरज, रघुनाथ तिवारी, आखिल आदि हैं। इन पात्रों के साथ ही नितीन, रितेश, निकी, रीता, भूल्लन, अंगूरी, चम्पा आदि पात्रों का केवल नामोल्लेख आया है। 'करुणा' उपन्यास में प्रत्येक पात्र अपनी-अपनी जगह पर सुसंगत द्रष्टव्य है। अत: इस उपन्यास के प्रमुख पात्र तथा गौण पात्रों के चारित्रिक विशेषताओं का विम्तृत विवेचन तथा विश्लेषण यहाँ पर इसप्रकार प्रस्तुत हैं -

प्रमुख पात्र :

उपन्यास में निहित निश्चित उद्देश्य की पूर्ति प्रधान पात्र द्वारा की जाती है। 'करुणा' उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में निम्न पात्र दृष्टिगत हैं -

3.2.1 करुणा :

जयप्रकाश कर्दम कृत 'करुणा' इस लघु उपन्यास का केंद्रीय पात्र तथा नायिका 'करुणा' है। वह एक मध्यमवर्गीय परिवार के टैक्सी ड्राईवर की संतान है। उसे दो भाई हैं किन्तु एक बस दुर्घटना तथा दूसरा फौज में मुठभेड़ में शहीद होने के पश्चात घर में करुणा माता-पिता की इकलौती संतान रही है। करुणा एक शिक्षित युवती है। वह युवावस्था में एक प्रतिभासंपन्न, प्रभावशाली युवक की ओर आकर्षित होती है किन्तु प्रेम असफल होने के कारण जीवन से निराश होती है। आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय करती है। वह धर्म से ब्राह्मण है किन्तु करुणा भगवान गौतम बुद्ध के समतावादी मूल्यों से निहित बौद्ध धर्म के मानवतावादी विचारों से प्रभावित होकर 'धम्म

दीक्षा' लेती है। वह बुद्ध के सिद्धांतों की अनुयायी वनकर समाज में इन विचारों का प्रसार एवं प्रचार करने की वाहक बनकर आदर्श समाज निर्माण करने का संकल्प करके अपना जीवन समाज सेवा में तथा कल्याण में समर्पित करती है। इस लघु-उपन्यास के कथानक में आरंभ से लेकर अंत तक करुणा ने महत्त्वपूर्ण तथा प्रधान पात्र की भूमिका अदा की है। अत: करुणा की चारित्रिक विशेषताओं का विस्तृत विवेचन तथा विश्लेषण यहाँ पर निम्नांकित है -

3.2.1.1 उपन्यास की नायिका :

'करुणा' इस लघु उपन्यास की 'नायिका' करुणा है। स्वयं लेखक इसके बारे में कहते है कि "यद्यपि उपन्यास की नायिका 'करुणा' एक भिक्षुणी है तथा वहीं इस उपन्यास का आधार भी है।"[3]

अत: कहना होगा कि 'करुणा'इस लघु:उपन्यास की नायिका करुणा है।

3.2.1.2 साहसी युवती :

करुणा जीवन में स्वयं निराशा, पीड़ा तथा अभावों से त्रस्त है। फिर भी वह जीवन से पलायन न करते हुए कहती है कि "जीवन से पलायन करना वहादुरी नहीं अपितु कायरता है।"[4] उक्त कथन 'करुणा' के साहसी तथा संघर्षशील स्वभाव का गुण उजागर करता है।

3.2.1.3 प्रेम और त्याग की मूर्ति :

करुणा प्रेम और त्याग की साक्षात मूर्ति है। वह अपना सारा जीवन रमेश के प्रेम में समर्पित करती है क्योंकि रमेश के लिए उसके हृदय में अथाह प्रेम है। वह रमेश के सुख-दु:ख को अपना सुख-दु:ख मानती है। उसका साथ देती है।

3.2.1.4 असफल प्रेमिका :

इस उपन्यास की नायिका 'करुणा' केंद्रिय पात्र के रूप में कार्यरत है। वह जीवन में असफल प्रेम की शिकार हुई है। वह युवावस्था में कॉलेज का उसका

सहपाठी प्रतिभा संपन्न रमेश नामक युवक के साथ स्नेह रखते हुए उसकी ओर आकर्षित है। करुणा का रमेश के साथ मित्रता का संबंध प्रेम में बदलता है। वह रमेश के साथ बेहद प्यार करके उसे अपना जीवन साथी बनाना चाहती है, परंतु रमेश जीवन में घटित अनिश्चित परिस्थितियों से संघर्षरत और टूटते देखकर स्वयं भी भौतिक जीवन का त्याग करके आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय करती है। 'करुणा' कहती है कि - "जीवन में जिस चीज़ की लालसा थी वही न पा सकी।"[5]

अत: उक्त कथन से स्पष्ट है कि करुणा अपने जीवन में असफल प्रेमिका के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

3.2.1.5 भारतीय भिक्षुणी संघ की महामंत्री :

ब्राह्मण होते हुए भी 'करुणा' बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर संघ में अपने सामाजिक कार्यो के तथा आचरण के बलबूते पर अपनी पहचान बनाकर सभी भिक्षुओं के आदर एवं सम्मान के पात्र बनकर भारतीय बौद्ध भिक्षुणी संघ की महामंत्री बनती है।

3.2.1.6 जिज्ञासु युवती :

इस लघु उपन्यास की नायिका का स्वभाव जिज्ञासु प्रवृत्ति का है। करुणा सोचती है कि इन भिक्षुओं का चित्त इतना शांत और स्थिर क्यों रहता है? वह एक दिन अपनी जिज्ञासा एक भिक्षुणी स्त्री के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहती है कि "इस भिक्षु जीवन में आपको कौन-सा सुख मिलता है जो सांसारिक सुखों से श्रेष्ठ है।"[6] करुणा मानवी जीवन के बारे में भी अपने मन में हमेशा विचार करती है कि "जीवन क्या है, उसका यथार्थ क्या है।"[7]

अत: कहना होगा कि उक्त कथन इस बात का संकेत है कि 'करुणा' जिज्ञासु स्वभाव की युवती है।

3.2.1.7 जीवन से समझौता करनेवाली युवती :

करुणा एक शिक्षित युवती है। वह जीवन में रमेश नामक शिक्षित युवक

की ओर आकर्षित थी। वह रमेश से विवाह करके उसके साथ जीवन बीताने की सोचती है किन्तु रमेश के साथ घटित दुर्घटना में उसके कटीप्रदेश पर भीषण आघात के कारण वह आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय करता है तथा अध्यापक की नौकरी के लिए नसबंदी ऑपरेशन का शिकार बनता है और बहन की हत्या के झूठे अभियोग में जेल जाता है। सामाजिक शोषण का शिकार बनता रमेश को देख करुणा इन सभी घटनाओं के आघातों को सहकर स्वयं जीवन से समझौता करती हुई अपने आपको समाज सेवा में समर्पित कर जीवन जीने लगती है। स्पष्ट है कि यदि जीवन में असफलता मिले तो भी करुणा जीवन से समझौता करती है।

3.2.1.8 विवेकशील युवती :

करुणा एक विवेकशील युवती है। वह हर कार्य करने से पहले सोच-समझकर निर्णय लेती है। किसी भी काम में जल्दबाजी नहीं करती। करुणा जीवन में निराश होकर भी पुनश्च जीवन से जुड़कर रहती है। वह आशावादी और विवेकशील युवती है।

3.2.1.9 ध्येयवादी युवती :

संसार में सभी व्यक्ति अपने जीवन में कोई-न-कोई निश्चित ध्येयपूर्ति के हेतु तत्पर रहता है। करुणा भी एक ध्येयवादी युवती है। वह एक शिक्षित तथा संस्कारों में पली हुई है। करुणा अपने जीवन का अंतिम ध्येय निश्चित करती है कि, संसार में समता, मानवतावादी विचारों तथा भगवान गौतम बुद्ध के सिद्धांतों का प्रचार तथा प्रसार करना। जीवन से निराश, पराजित और संघर्षशील लोगों का दु:ख दूर कर उन्हें जीवन की सही दिशा का बोध कराना ही अपने जीवन का महत् कार्य समझती है।

अत: उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'करुणा' इस लघु उपन्यास की नायिका 'करुणा' में साहसी, जिज्ञासु, विवेकशील, प्रेम और त्याग की मूर्ति, ध्येयवादी आदि गुणों का अंकन बड़ी गहराई के साथ दृष्टिगोचर होता है।

3.2.2 रमेश :

'करुणा' इस लघु उपन्यास के केंद्रिय पुरुष पात्र के रूप में रमेश नामक युवक है। वह मध्यमवर्गीय परिवार का एक शिक्षित युवक है। उसे जीवन में पारंवारिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि समस्याओं का निरंतर सामना करना पड़ा हैं। उसका व्यक्तित्व - त्याग, विद्रोही, कर्तव्यदक्ष, स्नेहमयी, ईमानदार, भावुक आदि गुणों से ओतप्रोत हैं। उपन्यास के कथानक में आरंभ से लेकर अंत तक रमेश ने महत्वपूर्ण पात्र की भूमिका अदा की है। अत: रमेश की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन तथा विश्लेषण यहाँ पर इसप्रकार प्रस्तुत हैं -

3.2.2.1 शिक्षित तथा साहित्य के क्षेत्र में विशेष अभिरुचि :

रमेश एक शिक्षित युवक है।उसकी साहित्य के क्षेत्र में गहरी अभिरूचि है। रमेश ने प्रेमचंद, शरत् और टैगोर से लेकर डिकेन्स रोबिन्स और गोर्की तक अनेक साहित्यकारों को पढ़ा है।वह साहित्यकारों की समस्याओं को आधार बनाकर एक उपन्यास का सृजन भी कर रहा है।वह साहित्य में शोधकार्य भी करना चाहता है।

अत: कहना होगा कि रमेश एक प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व का युवक है।

3.2.2.2 संगीत प्रेमी तथा सितार का अच्छा वादक :

रमेश ने अपने कॉलेज की शिक्षा के साथ-साथ प्राइवेट स्कूल में सितार वादन कला में पारंगतता प्राप्त की। उसने रवींद्र संगीत में उपाधि हासिल की हैं। उसके इन रुचियों के बारें में कहा जाता है कि "उसके वादन में जाने कौन-सी कला समा गयी थी कि श्रोता उसकी संगीत लहरियों पर मुग्ध हो झूम उठते थे। संगीत के प्रेमियों में उसके नाम की चर्चा होने लगी थी।"[8]

अत: स्पष्ट है कि रमेश संगीत प्रेमी तथा सितार का अच्छा वादक है। वह कला के क्षेत्र में पारंगत है।

3.2.2.3 पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निष्ठा के साथ पालन करनेवाला जिम्मेदार युवक :

रमेश के पिताजी हरिशंकर तपेदीक की बीमारी से पीड़ित है। उनकी असमय मृत्यु होती है। उनके परिवार के सदस्यों की संख्या अनियंत्रित होने के कारण वे आर्थिक अभावों से त्रस्त हैं। उनके परिवार में चार बेटे और दो बेटियाँ है, जिनमें रमेश सबसे बड़ा है। वह अपने परिवार की सुख-सुविधाओं के हेतु स्वयं त्यागमयी जीवन बीताकर परिवार का पालन अपनी जिम्मेदारी समझकर पूरी निष्ठा के साथ करता है।

3.2.2.4 स्नेहमयी, भावुक तथा वात्सल्यमयी स्वभाव :

रमेश अपने माता-पिता की असमय मृत्यु के पश्चात घर में सभी भाई-बहनों से उम्र से बड़ा है। वह अपने से छोटे भाई-बहनों के साथ बड़े प्यार के साथ बर्ताव करता है। वह भावुक, स्नेहमयी तथा वात्सल्यमयी है। परिवार के सभी सदस्यों से वह बर्ताव करता है।

3.2.2.5 आर्थिक अभावों से त्रस्त :

रमेश के पिताजी सरकारी कार्यालय में क्लर्क की नोकरी करते थे किन्तु नौकरी से अवकाश प्राप्त होने के पश्चात परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण आर्थिक स्थिति डगमगाने लगती है। बढ़ती महंगाई, पिताजी की बीमारी, भाई-बहनों के स्कूल का खर्च आदि से उनका परिवार त्रस्त रहता है जिससे स्वयं रमेश को इन मुसीबतों से सामना करना पड़ता है।

3.2.2.6 विद्रोही युवक :

रमेश के व्यक्तित्व में विद्रोह का पहलू भी परिलक्षित है। वह सामाजिक शोषण का शिकार बना हुआ है। रमेश प्रस्थापित भ्रष्ट समाज व्यवस्था के बारे में कहता है कि "जहाँ पर आदमी के अधिकारों का इस तरह हनन हो जहाँ एक जवान और अविवाहित व्यक्ति को खस्सी होने को मजबूर होना पड़े। ऐसे समाज और ऐसी व्यवस्था

का क्या लाभ?"[9]

उक्त कथन रमेश के विद्रोही स्वभाव का संकेत देता है।

3.2.2.7 भ्रष्ट राजनीति के नसबंदी षडयंत्र का शिकार :

बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए सरकार द्वारा नसबंदी के कार्यक्रम का संचलन किया जाता है, जो आम जनता के शोषण का साधन बनता है। इसमें एक स्कूल में अध्यापक की नौकरी के लिए नियुक्त अविवाहित रमेश की नसबंदी का ऑपरेशन किया जाता है। लेखकने यहाँ प्रशासकीय अराजकता को इसके माध्यम से वाणी देने का प्रयत्न किया है।

3.2.2.8 कल्पनाशील युवक :

रमेश प्रतिकूल परिस्थितियों की बनती बिगड़ती स्थिति के कारण मानसिक पीड़ाओं से त्रस्त बनकर सोचता है कि "काश! मेरे भी पंख होते और मैं उड़ सकता तो सारे बंधनों से मुक्त होकर अनंत की सीमाओं को लांघ जाता।"[10] वह कल्पनाशील युवक होने के नाते बंधन मुक्त जीवन जीना चाहता है।

3.2.2.9 त्याग, समर्पणशील युवक :

घर की बिगड़ती आर्थिक स्थिति, असमय माता-पिता की मृत्यु, नौकरी में सुस्थिर होने के लिए अविवाहित होकर भी नसबंदी का ऑपरेशन, दुर्घटना में कटीप्रदेश पर भीषण आघात होने से आजीवन अविवाहित रहने की विवशता आदि रमेश के जीवन की त्रासदियों से स्पष्ट है कि उसका जीवन पूर्णत: त्याग एवं परिस्थितियों के समक्ष समर्पणशील है। वह स्वयं इन परिस्थितियों से तंग आकर कहता है कि "विषाद ही मेरे जीवन का पारितोषिक है। विषाद सहने के लिए ही मैं पैंदा हुआ हूँ और विषाद सहते-सहते ही एक दिन ......।"[11]

रमेश का जीवन पीड़ा, यातना, विषादों से त्रस्त है, जो त्याग एवं समर्पणशील जीवन जीने के लिए बाध्य है।

3.2.2.10 जेल कैदियों का नायक :

रमेश जेल में रहते हुए एक विद्रोही कैदी के विचारों से प्रभावित होकर जेल में कैदियों पर होनेवाले अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाता है। वह उन शोपित कैदियों का नेतृत्व करता है। वह कैदियों को उनपर हो रहें अन्याय का प्रतिकार करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित भी करता है। अत: रमेश जेल में कैदियों का नायक बनता है।

3.2.2.11 आदर्श समाज की स्थापना करने का संकल्प :

रमेश एक समतामूलक सुखी संपन्न और न्याय पर आधारित मानवतावादी मूल्यों से निहित आदर्श समाज की स्थापना करने का दृढ निश्चय एवं संकल्प करता है। वह अपना जीवन इसी उद्देश्यपूर्ति के हेतु समर्पित करता है।

3.2.2.12 अन्याय, अत्याचार का विरोधी :

रमेश एक शिक्षित युवक है। वह स्वयं दलित है, जो आम समाज में दलित समाज के साथ हो रहें अन्याय, अत्याचार का डटकर विरोध करता है। दलित युवक में अन्याय,अत्याचार के प्रति विरोध भावना के बारे में डॉ.यादवराव धुमालजी का उल्लेखनीय मन्तव्य है कि "दलित नारियों की बेइज्जती को आँख मूँदकर आज के दलित युवक नहीं देख पाते। उनमें बदले की भावना पैदा हो रही है।"[12] 'करुणा' उपन्यास में धामपुर गाँव में ठाकुर सुखदेव सिंह का बेटा सूरज उसी गाँव के एक दलित मजदूर किसान भूल्लन की बेटी अंगूरी के साथ बलात्कार करने का प्रयास करता है। रमेश इस घटना के प्रति गाँव में पंचायत बुलाकर सूरज को सजा दिलाता है ताकि गाँव में फिर किसी दलित नारी के साथ ऐसी घटना न हो। लेकिन गाँव के ठाकुर के समर्थक लोग रमेश को चुप रहने के लिए कहते हैं। रमेश उनसे कहता है कि - "मैं अन्याय के विरूद्ध चुप होकर नहीं बैंठ सकता।"[13] रमेश बदले की भावना से ओतप्रोत बनकर सवर्णो के दलितों पर होनेवाले अन्याय अत्याचार का विरोध करता है।

स्पष्ट है कि रमेश अन्याय, अत्याचार के खिलाफ संघर्षशील युवक बनकर

वर्तमान दलित युवा वर्ग में चेतना उभारने का काम करता है।

3.2.2.13 गौतम बुद्ध के विचारों का अनुयायी :

रमेश भौतिक जीवन का परित्याग करके भगवान गौतम बुद्ध के मानवतावादी मूल्यों की विचारधारा से प्रभावित होकर उनके धम्म की दीक्षा लेता है। वह उनके विचारों को समाज में प्रसार-प्रचार हेतु कार्यरत रहता है। रमेश उनका अनुयायी बनता है।

'करुणा' उपन्यास का पात्र रमेश प्रभावशाली पात्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। वह बुद्ध तत्वज्ञान के आधार पर समाज का प्रबोधन करना चाहता है।

गौण पात्र :

उपन्यास में प्रमुख पात्रों के साथ-साथ अन्य पात्र भी रहते हैं, जो कथानक को गति प्रदान करने में सहाय्यक होते हैं। 'करुणा' उपन्यास में प्रधान पात्र के सहाय्यक पात्र तथा गौण पात्र के रूप में निम्न लिखित पात्र है -

3.2.3 सूरज :

सूरज धामपुर गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा सरपंच ठाकुर सुखदेवसिंह की इकलौती संतान है। सूरज का जीवन सुख और समृद्धिता के वातावरण में बीता है। अत: सूरज 'करुणा' इस लघु उपन्यास में गौण पात्र के रूप में कार्यरत है। जो इसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्न लिखित रूप में दिखाई देती है -

3.2.3.1 उद्दण्ड तथा शरारती युवक :

सूरज दिनभर गाँव में घूमता है। फिल्में देखना, राह चलती लड़कियों की छेड़ छाड़ करना उसका काम था। बचपन से ही सुख और समृद्धी के वातावरण में पलने के कारण पढ़ाई में उसकी रुचि नहीं है वह उद्दण्ड और शरारती स्वभाव का युवक है।

3.2.3.2 व्यसनाधीन युवक :

सूरज नशीले पदार्थों का सेवन करता है। वह नशापान की आदत का गुलाम बना हुआ है। "सूरा और सौन्दर्य इन दोनों चीजों में उसकी गहरी आसक्ति है। दोनों ही चीजों को प्राप्त करने की ललक उसके मन में सदा बनी रहती। गला तर करने के लिए सूरा तो प्राय रोज मिल जाती पर सौन्दर्य की प्यास उसे निरंतर उत्पीड़ित किये रहती।"[14] अत: सूरज व्यसनाधीन बनकर अपना जीवन तबाह करता है।

3.2.3.3 धूर्त तथा चालाक :

सूरज धूर्त और चालाक युवक है। वह एक दिन गाँव के गरीब दलित मजदूर किसान की बेटी पर जोर-जबरदस्ती से बलात्कार करने का असफल प्रयास करता है। वह दलित युवती पर जुर्म करते समय पकड़ा जाता है। उसी समय उसी गाँव का एक शिक्षित युवक रमेश सूरज के खिलाफ पंचायत बुलाकर सूरज को सजा दिलाता है। उसे पंचों द्वारा दो साल गाँव से निष्कासित किया जाता है। सूरज शहर जाकर पुलिसवालों को रिश्वत देकर रमेश को उसकी बहन रिता की हत्या के झूठे अभियोग में फँसाकर जेल भेजता है।

यहाँ यह स्पष्ट होता है कि सूरज का स्वभाव धूर्त तथा चालाक है।

3.2.3.4 पिता का हत्यारा :

सूरज शहर की एक बदनाम बस्ती में रहकर सिनेमा के टिकटों की ब्लैक मार्किटिंग और दलाली के काम में लगकर शराब और शबाब का आदी होता है। वह चम्पा नामक वेश्या को अपने घर में पत्नी की तरह रखता है जिससे पिता-पुत्र में इस अनैतिक बात को लेकर संघर्ष शुरू होता है, जिसमें पिता द्वारा चम्पा को रण्डी कहकर घर से बाहर निकालने को कहते ही सूरज शराब के नशे में पिता ठाकुर सुखदेवसिंह के पेट में छुरा घोंप देता है और पिता की हत्या के जुर्म में गिरफ्तार होता है।

'करुणा' इस लघु-उपन्यास का गौण पात्र सूरज, उद्दण्ड तथा शरारती,

व्यसनाधीन,धूर्त तथा चालाक और पिता का हत्यारा आदि के रूप में दृष्टिगोचर होता है।

3.2.4 ठाकुर सुखदेवसिंह :

ठाकुर सुखदेवसिंह धामपुर गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा सरपंच है। उनका जीवन सुख-सुविधाओं तथा साधन-संपन्नता से परिपूर्ण है। सरकारी अफसर, नेताओं के साथ उनकी पहचान है। उनके बारे में कहा जाता है कि - "इलाके भर में सभी लोग उनकी बात को पानी देते थे।"[15] अत: उनकी पत्नी की असमय मृत्यु के पश्चात उन्हें एक सूरज नामक संतान है। सूरज उद्दण्ड तथा शरारती स्वभाव का है जिसके द्वारा एक दिन नशें में ठाकुर सुखदेवसिंह की हत्या करता है। वे स्वार्थी, कुशल राजनीतिज्ञ, शोषक, वृत्ति के है। 'करुणा' इस लघु उपन्यास में यह पात्र गौण पात्र के रूप में कार्यरत है। खली प्रवृत्ति के कारण वह सद्प्रवृत्ति के पात्रों के बीच रोडे अटकाता है।

3.2.5 आखिल :

'करुणा' लघु उपन्यास में आखिल एक गौण पात्र के रूप में द्रष्टव्य है। वह एक शिक्षित युवक है। वह रमेश का छोटा भाई है। रमेश के जेल जाने के बाद घर की सारी जिम्मेदारी आखिल पर आती है। आखिल पढ़ाई में कुशल तथा प्रतिभासंपन्न युवक है। किन्तु आर्थिक अभावों के कारण अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर परिवार के उदरनिर्वाह के लिए अपनी किताबों को बेचकर फलों की गाड़ी खरीद कर फलों को बेचकर अपना तथा परिवार का पालन करता है।

आखिल कर्तव्यदक्ष, व्यवहार कुशल, परिश्रमी, प्रतिभासंपन्न तथा प्रभावी व्यक्तित्व का युवक है।

3.2.6 रघुनाथ तिवारी :

'करुणा' लघु-उपन्यास में रघुनाथ तिवारी गौण पात्र के रूप में कार्यरत

द्रष्टव्य है। रघुनाथ तिवारी एक पुलिस ऑफिसर है। वह जाति से ब्राह्मण है। यह सूरज से रिश्वत लेकर बेकसूर रमेश के खिलाफ उसकी बहन रिता की हत्या के झूठे अभियोग में फँसाकर जेल भेजता है। वह स्वयं को ईमानदार कहता है किन्तु कुछ ही पलों में अपनी बेईमानी की औकात दिखाता है।

रघुनाथ तिवारी स्वार्थी, लोभी तथा शोषक वृत्ति का द्योतक है।

3.3 'छप्पर' उपन्यास में चित्रित पात्रों का परिचयात्मक अनुशीलन :

जयप्रकाश कर्दम जी के 'छप्पर' उपन्यास में मुख्य या प्रधान पात्र, गौण पात्र तथा सहाय्यक पात्रों का चित्रण बखूबी से द्रष्टव्य हैं। इस उपन्यास में पात्रों की संख्या बारह है। इस उपन्यास का नायक तथा प्रधान पात्र के रूप में चंदन दृष्टिगोचर है। इस प्रमुख पात्र को छोड़कर अन्य गौण पात्रों के रूप में सुक्खा, रमिया, ठाकुर हरनामसिंह, रजनी, कणापंड़ित, लाला साहुकार, हरिया, कमला, रतन, रामहेत, नन्दलाल आदि परिलक्षित होते हैं। प्रत्येक पात्र अपनी-अपनी जगह पर सुसंगत वर्ताव करते हैं। अत: इस उपन्यास के प्रमुख पात्र तथा गौण पात्रों के चरित्र-चित्रण का विस्तृत विवेचन तथा विश्लेषण यहाँ पर इसप्रकार प्रस्तुत हैं -

प्रमुख पात्र :

उपन्यास में निहित निश्चित उद्देश्य की पूर्ति प्रधान पात्र द्वारा की जाती है। 'छप्पर' उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में निम्न पात्र दृष्टिगत हैं -

3.3.1 चंदन :

जयप्रकाश कर्दम कृत 'छप्पर' उपन्यास का केंद्रीय पात्र तथा नायक के रूप में चंदन है। वह एक दलित मजदूर किसान सुक्खा की इकलौती संतान है। चंदन एक शिक्षित युवक है जो स्वाभिमानी, आत्मविश्वासु, दृढ निश्चयी, सहयोगी, भावुक, विद्रोही, कर्तव्यदक्ष, ईमानदार आदि गुणों से ओतप्रोत है। चंदन डॉ.बाबासाहब

अम्बेड़करवादी विचारों का वाहक है। अत: चंदन दलित समाज के सामाजिक परिवर्तनवादी आंदोलन की क्रांति का प्रतीक है। उपन्यास के कथानक में आरंभ से लेकर अंत तक चंदन ने महत्त्वपूर्ण तथा प्रधान पात्र की भूमिका अदा की है। चंदन की चारित्रिक विशेषताएँ इसप्रकार द्रष्टव्य हैं -

3.3.1.1 शिक्षित युवक :

चंदन एक शिक्षित युवक है। उसने साहित्य में एम्.ए. की परीक्षा पास की है और पीएच्.डी. के लिए पंजीकरण कराया है। वह स्वयं शिक्षित वनकर दूसरों को भी शिक्षित बनाना चाहता है।

3.3.1.2 कर्तव्य के प्रति निष्ठा और ईमानदार :

कर्तव्य पूर्ति मनुष्य जीवन की सार्थकता की कुंजी है। कर्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदारी के आधार पर व्यक्ति समाज में अपनी पहचान वनाने में कामयाव होता है। चंदन की सामाजिक कर्तव्यतत्परता तथा निष्ठा और निरंतर कर्मरत एवं ईमानदार व्यक्तित्व तथा कृतित्व से प्रभावित होकर हरिया चंदन के वारे में कहता है कि "अपने नाम को सार्थक कर दिया तुमने। तुम सचमुच चंदन हो, अपने कुल-खानदान के भी और समाज के भी। तुमने अपनी खुशबू से इस समाज को महका दिया हैं।"[16] उक्त कथन इस बात का संकेत है कि चंदन के व्यक्तित्व में सामाजिक कर्तव्य भावना के प्रति निष्ठा तथा ईमानदारी की महक दृष्टिगोचर होती है।उसका व्यक्तित्व दीन-दलितों के दु:ख पर मरहम लगाकर उन्हें दु:ख से शांति देने का काम करता है।

3.3.1.3 आत्मविश्वास :

आत्मविश्वास व्यक्ति की आंतरिक मन की शक्ति है। आत्मविश्वास एक ऐसी ताकत है जिसके बलबूते पर कोई भी व्यक्ति अपने निश्चित ध्येयपूर्ति में सफलता हासिल करता है। चंदन मातापुर गाँव के एक गरीव मजदूर किसान का लड़का है। उनका परिवार आर्थिक अभावों से त्रस्त है। चंदन बचपन में स्कूल में फटा कुर्ता पहनकर

आता है। एक दिन कक्षा में उसका फटा कुर्त्ता व्यंग्य बनकर उसका उपहास किया जाता है किन्तु इससे चंदन बिल्कुल निराश या अपमानित न होते हुए अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान देता है और उसकी सहपाठी रजनी से कहता है कि "तुम देखना रजनी! मातापुर का फटे कुर्त्तेवाला यह गरीब लड़का सबसे अच्छे नम्वरों में पास होगा।"[17] अत: कहना सही होगा कि चंदन अपने आत्मविश्वासु वृत्ति का प्रमाण स्वयं कार्यरत रहकर सिद्ध करता है। अपनी दरिद्रयता की, अभावग्रस्तता की उसे लज्जा महसूस नहीं होती बल्कि प्रतिकूलता पर आत्मविश्वास के साथ विजय हासिल करता है। अनहोनी को होनी में बदलने का आत्मविश्वास उसमें है।

3.3.1.4 नास्तिक तथा मानवतावादी :

चंदन शिक्षित युवक है। वह सृष्टि में किसी भी ईश्वर, आत्मा, परमात्मा या दैवी शक्ति को न मानते हुए मानवता को ही सच्चा धर्म तथा उसकी सत्ता को ही दुनियाँ में सर्वोपरी मानता है। वह स्वयं कहता है कि "यदि ईश्वर या भगवान की सत्ता को मानना ही आस्तिक या नास्तिक होने का आधार है, तो निश्चित रूप से मैं नास्तिक हूँ।"[18] अत: उक्त कथन चंदन के नास्तिक स्वभाव का प्रमाण है तथा मानवता को सर्वोपरी मानते हुए कहता है कि "मनुष्य सबसे वड़ी सत्ता है, दुनियाँ में मनुष्य से वड़ी कोई सत्ता नहीं है।"[19] अर्थात कहना सही होगा कि चंदन के व्यक्तित्व में नास्तिक एवं मानवतावादी गुण स्वाभाविक रूप से द्रष्टव्य हैं। वह मानवतावादी विचारधारा को अपनाकर गरीब, दरिद्री, असहाय, उपेक्षित दलितों का सहारा बनता है, उसके आँसू पोंछकर उनमें चेतना जागृति करता है।

3.3.1.5 सामाजिक क्रांति का प्रतीक :

चंदन उपन्यास का नायक है। वह अम्वेड़कर जी के शिक्षा, संगठन, संघर्ष के मूलमंत्र से प्रभावित होकर दलित समाज के विकास हेतु दिन-रात कठोर परिश्रम करता है। वह दलित समाज को उनके मौलिक अधिकारों के प्रति सचेत करते हुए उनमें

वैचारिक जागृति का दीप प्रज्वलित करता हैं। चंदन की सहपाठी रजनी उसके सामाजिक कार्यो के बारे में कहती है कि "समाज से अन्याय और असमानता को मिटाकर सवर्ण-अवर्ण, सछूत-अछूत, अमीर-गरीब और मालिक-मजदूर सबको एक समान धरातल पर लाने तथा समाज में खुशहाली और भाईचारा बढ़ाने के लिए कार्य कर रहा है चंदन।"[20] अत: कहना सही होगा कि उक्त कथन द्वारा स्पष्ट होता है कि चंदन दलित समाज की परिवर्तनवादी विचारधारा की सामाजिक क्रांति का प्रतीक बना हैं।

3.3.1.6 भावुक तथा संवेदनशील युवक :

चंदन के व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण पहलु है भावुकता। चंदन एक शिक्षित युवक तथा संवेदनशील मन का भावुक युवक है। उसके मन में दीन - दलितों के प्रति आस्था है। वह दूसरे के दु:खों को स्वयं का दु:ख समझकर उससे तदाकार होता है। चंदन सामाजिक शोषण से प्रताड़ित बलात्कारित नारी 'कमला'की व्यथा को सुनकर स्वयं दु:खी होते हुए कहता है कि "कैसी विचित्र व्यवस्था है इस समाज की एक ओर आतताई भेड़िये हैं और दूसरी ओर कमला जैसी निरीह और असहाय युवतियाँ।"[21] चंदन की भावुकता ने उसे संवेदनशील बनाया है। वह गरीब किसानों, खेतिहर मजदूरों, बलात्कारित दलित औरतों आदि के ऊपर होनेवाले अन्याय के प्रति भावुक और संवेदनशील जरूर बनता है परंतु केवल रोते रहने की अपेक्षा उनमें व्यवस्था के खिलाफ चेतना भरने का कार्य करता हैं।

3.3.1.7 विद्रोही युवक :

चंदन भारतीय समाज व्यवस्था में प्रस्थापित शोषक वर्ग के खिलाफ संघर्ष करने के लिए आमदा होता है। वह स्वयं दलित समाज के शोषण से स्वानुभूत है। चंदन समाज में व्याप्त शोषण, अन्याय, अत्याचार करनेवाले लोग आदि के विरूद्ध अपने समाज के लोगों को शिक्षित बनाकर उनमें वैचारिक जागृति करके संगठन के बल पर सार्थक संघर्ष करने की सोचते हुए कहता है कि "हमें समाज से टक्कर लेनी है सत्ता से लड़ाई

लड़नी है, जुल्म और शोषण के विरूद्ध संघर्ष करना हैं।"[22] अत: कहना सही होगा कि उक्त कथन चंदन के विद्रोही स्वभाव का संकेत है। चंदन विद्रोही जरूर है परंतु उसका विद्रोह एक मर्यादा में बंद है। वह मार-काट, खून-खराबा के साथ क्रांति करना नहीं चाहता है।

3.3.1.8 स्वाभिमानी युवक :

चंदन एक दलित गरीब मजदूर किसान परिवार का युवक है। वह आर्थिक अभावों के कारण स्कूल में फटा कुर्ता पहनकर जाता है। कक्षा में उसका फटा कुर्ता व्यंग्य बनकर उसके उपहास का कारण बनता है। जिससे उसके मातापुर गाँव के ठाकुर हरनामसिंह की इकलौती संतान रजनी जो चंदन की सहपाठी है। वह चंदन के प्रति सहानुभूति रखती है। वह चंदन को नया कुर्ता लाने के लिए आर्थिक मदद करने का प्रयास करती है किन्तु चंदन उसे इस मदद को नकारते हुए कहता है कि - "शुक्रिया! न तो मैं पहली बार फटा कुर्ता पहन रहा हूँ और न ही पहली वार मेरा उपहास हो रहा है। इस उपहास से शर्मिंदा नहीं हूँ मैं।"[23] अत: कहना सही होगा कि उक्त कथन चंदन के स्वाभिमानी व्यक्तित्व को स्पष्ट करने का प्रमाण है। वह अन्य दलित समाज के बंधुओं को भी स्वाभिमान की रक्षा करने के पाठ पढ़ाता है।

3.3.1.9 समाज के लिए त्याग एवं समर्पण की भावना :

व्यक्ति और समाज का रिश्ता अटूट है। जैसे कि जल और मछली का, अर्थात जल के बिना मछली का कोई अपना 'स्व' अस्तित्व नहीं उसी तरह समाज के बिना व्यक्ति का भी। कर्तव्य परायण व्यक्ति को सच्चा साधक कहा जाता है। त्याग, कर्तव्य, निष्ठा ये गुण मनुष्य की साधारण मनुष्य से विशेष पहचान बनाते है। त्याग, समर्पण एवं कर्तव्य की सामाजिक भावना चंदन के व्यक्तित्व के पहलू हैं। वह अपना जीवन तथा सर्वस्व दलित समाज के उत्थान हेतु समर्पित करते हुए कहता है कि - "मेरा प्रयास है कि समाज से यह अज्ञान और पिछड़ापन दूर हो तथा निराशा और अंधकार के

साए में जी रहें समाज में आशा और विश्वास पैदा हो। यदि मेरे प्रयास से मेरे पद्दलित समाज का कुछ भला हो सका तो मैं स्वयं को धन्य समझूंगा और इसके लिए खुशी - खुशी अपना सब कुछ त्यागने को तैयार हूं मैं।"[24]

अत: उक्त कथन इन बातों का संकेत है कि चंदन का स्वभाव समाज से जुड़ा हुआ है और वह समाज सुधार हेतु त्यागमयी जीवन वीताकर अपना सर्वस्व समर्पण के लिए तत्पर है।

3.3.1.10 रूढ़ि परंपराओं का विरोधी :

चंदन समाज में व्याप्त धार्मिक आडंवर, रूढ़ि-परंपरा, अंधविश्वास, कर्मकांड के प्रति विरोध दर्शाता है। यहाँ के दलित समाज के दारिद्रय अभावों को यहाँ की व्यवस्था को दोषी ठहराता है। चंदन धर्मग्रंथ तथा ईश्वर के नाम पर अज्ञानी लोगों का शोषण करनेवाले पंड़ितों के खिलाफ आवाज उठाता है। उनके पाखंडता के वारे में कहता है कि - व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी रूप में व्राहमण उससे टैक्स वसूल करता है।"[25] यहाँ रूढ़ि-परंपराओं का विरोध करते हुए चंदन समाज के धर्म पंडितों की आलोचना करता है।

3.3.1.11 समतावादी समाज का पक्षधर तथा अहिंसा का पुजारी :

चंदन भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित प्राचीन काल से चली आ रही वर्ण -व्यवस्था के प्रति विरोध दर्शाता है। हिंदू समाज में जन्म या कर्म के आधार पर स्थापित व्यवस्था को बदलकर मनुष्य की योग्यता के गुणों को ही सर्वोपरी मानता है। वह समाज में सभी व्यक्तियों में 'समतावादी' विचारों को स्थापित करने का प्रयास करता है। वह स्वयं कहता है कि "हमारा उद्देश्य है-समानता समाज में सव लोग सव क्षेत्रों में समान हो और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीके से संघर्ष करना है।"[26] चंदन अहिंसा और शांति का पक्षधर वनकर समाज विकास के लिए गौतम वुद्ध के विचारधारा का पुरस्कार करता है।

अत: कहना सही होगा कि चंदन शिक्षा, संगठन, संघर्ष की ताकत से समताधिष्ठित समाज की स्थापना अहिंसा के मार्ग से करने का दृढ़ निश्चय करता है।

3.3.1.12 माता-पिता की आशा-आकांक्षाओं के प्रति सचेत :

चंदन एक दलित मजदूर किसान की इकलौती संतान है। उसके माता-पिता उसे उच्चशिक्षित बनाकर एक अफसर के रूप में देखना चाहते हैं। चंदन की पढ़ाई के लिए उन्हें कठोर परिश्रम, मेहनत, मजदूरी करनी पड़ती है। इससे चंदन अच्छी तरह अवगत है। वह मन-ही-मन में सोचता है कि मुझे शिक्षित बनाने के पीछे मेरे माता-पिता का कोई-न-कोई हेतु जरूर होगा इसलिए वह स्वयं कहता है कि "मेरे माता-पिता कितना कष्ट उठाकर मुझे पढ़ा रहे हैं। उनको मुझसे कुछ आशाएँ हैं। उनकी आशाओं पर पानी फेरना नहीं चाहता मैं। मेरा काम पढ़ना हैं, मैं पूरी ईमानदारी और मेहनत से पढूँगा।"[27] माता-पिता के प्रति सचेत बनकर उनके प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहता है। अर्थात चंदन अपने माता-पिता की आशा-आकांक्षाओं के प्रति सचेत दिखाई देता है।

3.3.1.13 डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी के विचारों का वाहक :

चंदन डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी के शिक्षा, संगठन, संघर्ष आदि विचारों से प्रभावित है। वह इन विचारों का अनुयायी है। वह समता, स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय के मानवतावादी मूल्यों से दलित समाज के उनके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि मौलिक अधिकारों के प्रति जागृत करता है।

3.3.1.14 कठोर परिश्रमी युवक :

जीवन में किसी भी निश्चित साध्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर कठोर परिश्रमी करने की जरूरत रहती है। चंदन कठोर परिश्रमी दलित युवक है। वह स्वयं से ज्यादा समाज तथा दलित आंदोलन के नियोजन को महत्त्व देता है। वह दिन-रात दलित समाज उत्थान हेतु स्वयं की नींद, भूख, प्यास तथा आराम को त्यागकर निरंतर इन सामाजिक कार्यों में रत है। हरिया चंदन के दलित आंदोलन का सजग सिपाही तथा हर

लड़ाई का साथी है चंदन को इन कार्यो से हर पल जुड़ा देखकर उसे आराम करने के लिए कहता है तो वह स्वयं हरिया से कहता है कि - "अभी आराम करने की उम्र मेरी नहीं है बाबा! और यदि मैं आराम की ओर ध्यान दूँगा तो काम कैसे कर पाऊँगा।"[28]

अत: उक्त कथन इस बात का संकेत है कि चंदन सामाजिक कार्य में कठोर परिश्रम में रत रहता है,जो उसके स्वभाव का एक पहलू वना दृष्टिगोचर होता है।

3.3.1.15 जिज्ञासु :

सृष्टि में सभी सजीवों में मानव जीव जिज्ञासु भावना से ओतप्रोत है। चंदन दलित समाज की दरिद्रता, पीड़ा, अभावग्रस्तता, यातनामयी जीवन वीताने की मजबूरी के कारणों को तलाशना चाहते हुए कहता है कि "हमारे शोषण का आधार क्या है? हमारे उत्थान और विकास में कौन से तत्व बाधक है।"[29] वह एक दलित शोषित नारी 'कमला' पर हुए अन्याय के बारे में भी जानना चाहते हुए कमला से कहता है कि "जरूर कोई क्रूर मजाक हुआ है आपके साथ।"[30] चंदन हरिया को हर समय किसी गहरी चिंता में डूबा रहता देखकर मन-ही-मन सोचता है कि "जीवन का कौन-सा यथार्थ है, जिससे भागकर स्वयं को हर समय किसी-न-किसी कार्य में व्यस्त रखता है वह।"[31]

अत: उक्त विवेचन इन बातों के संकेत देते है कि चंदन व्यक्तित्व के कई पहलुओं में जिज्ञासुवृत्ति भी दृष्टिगोचर होती है। दलितों की मजबूरी की कारण मीमांसा को वह जिज्ञासा के आधार पर तलाशना चाहता है।

3.3.1.16 स्पष्टवादी :

समाज में कई लोग स्पष्ट वक्ता होते हैं। स्पष्ट वक्ता व्यक्ति से समाज डरता भी है और उसका विरोध भी करता है। चंदन इसी प्रकार का व्यक्ति है।

चंदन स्पष्टवादी व्यक्ति है। चंदन ईश्वर के प्रति नकार तथा सवर्ण मानसिकता से ग्रस्त शोषक वर्ग पूँजीपति, सामंतवादियों का खुलेआम विरोध करता है। वह दलित समाज को उनके दारिद्रय, शोषण के कारणों को उनके सम्मुख स्पष्ट रूप में

प्रस्तुत करता है। अत इन बातों से चंदन का स्पष्टवादी स्वभाव दृष्टिगोचर होता है।

3.3.1.17 मानवीय जीवन में शिक्षा को महत्त्व देनेवाला युवक :

चंदन एक दलित मजदूर किसान की शिक्षित संतान है। वह स्वयं मानवी जीवन में शिक्षा के मूल्य से परिचित है। शिक्षा आत्मा और मन को परिपूर्ण विकसित कर व्यक्ति में सर्वोत्कृष्ट गुणों की अभिव्यक्ति करती है। चंदन दलित समाज के पीड़ा, यातना, गुलामी, आर्थिक, सामाजिक, शोषण के मूल कारणों में अज्ञान अर्थात अशिक्षा को मानता है। वह उन्हें शिक्षा का महत्त्व समझाते हुए कहता है कि "जीवन की लड़ाइयों को लड़ने के लिए शिक्षा सबसे ज्यादा मारक और शक्तिशाली शस्त्र है। शिक्षा ही उत्थान और विकास का आधार हैं।"[32] वह दलितों को शिक्षित बनाकर उनका विकास करना चाहता है। चंदन दलित समाज को शिक्षा का महत्त्व समझाकर उनमें शैक्षिक जागृति करता है।

अत: कहना सही होगा कि जयप्रकाश कर्दम जी के 'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन अपने नाम के अनुरूप काम में कार्यरत दृष्टिगोचर है। चंदन कर्तव्य के प्रति निष्ठा तथा ईमानदार, आत्मविश्वासु, नास्तिक तथा मानवतावादी, सामाजिक क्रांति का प्रतीक, भावुक तथा संवेदनशील, विद्रोही, स्वाभिमानी, जिज्ञासु, स्पष्टवादी, समता तथा अहिंसा का पक्षधर, कठोर परिश्रमी, अम्बेड़कवादी विचारों का वाहक आदि विशेषताओं से परिपूर्ण है। वह फुले, अम्बेड़कर, महात्मा गांधी, कवीर, मार्क्स आदि की विचारधाराओं का वाहक है। वह शांतिप्रिय क्रांति का उद्गाता लगता है। उसमें आक्रोश नहीं है। वह परंपरावादी लोगों के मन परिवर्तन पर बल देता है।

गौण-पात्र :

उपन्यास में प्रमुख पात्रों के साथ-साथ अन्य पात्र भी रहते हैं, जो कथानक को गति प्रदान करने में सहाय्यक होते हैं। 'छप्पर' उपन्यास में गौण पात्र के रूप में निम्न पात्र महत्वपूर्ण योगदान निभाते हैं -

3.3.2 रजनी :

रजनी एक शिक्षित युवती है। वह मातापुर गाँव के एक प्रतिष्ठित तथा साधन-संपन्न परिवार ठाकुर हरनामसिंह की इकलौती संतान है। वह परिवर्तनवादी विचारधारा की युवती है। रजनी का व्यक्तित्व-प्रेरणादायी, मूकप्रेमिका, विद्रोही, समता, मानवतावादी, भावुक, समाजसेविका आदि गुणों से ओतप्रोत दिखाई देता है। अत: रजनी की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन तथा विश्लेषण यहाँ निम्नांकित है -

3.3.2.1 प्रभावशाली तथा मन को मोहित करनेवाला व्यक्तित्व :

'छप्पर' उपन्यास में लेखक ने रजनी के प्रभावशाली व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि - "भरा-पूरा यौवन, सुन्दर-सुशील तथा नारी सुलभ सभी गुणों से संपन्न थी रजनी। नाक-नक्श और शरीर का गठन ऐसा मिला था उसे कि कामदेव भी लज्जित हो जाएँ अपने आप पर। लम्बी-लम्बी पलकों से ढकी उसकी काली-काली आँखों में हिरनी जैसी चपलता हो न हो लेकिन गहराई बहुत थी उनमें और वह भी इतनी कि कोई एक बार उतर जाए उसकी इन आँखों में तो डूबे विना रह नहीं सकता था।"[33]

अत: उक्त कथन रजनी के प्रभावशाली व्यक्तित्व के पहलुओं को स्पष्ट करता है। वह देखने में सुंदर होकर भी उसका मन भी सुंदर और पवित्र रहा है। वह ठाकुरों का वंशज होकर भी ठाकुरों की दुष्टता उनमें नहीं उतरी है।

3.3.2.2 मानवतावादी विचारधारा की पक्षधर :

रजनी एक शिक्षित युवती है। वह मानवतावादी विचारों की पक्षधर है। वह सृष्टि के सभी मानव जीव को समान समझती है। वह कहती है कि "ब्राह्मण और भंगी क्या दोनों की शरीर रचना एक जैसी नहीं होती? क्या दोनों हाड़-मास के बने हुए नहीं होते? क्या दोनों के शरीर में बहनेवाले खून का रंग एक जैसा नहीं है? फिर दोनों समान क्यों नहीं हो सकते।"[34]

अत: उक्त कथन रजनी के मानवतावादी विचारधारा को स्पष्ट करते है। वह साम्यवाद का नारा लगाकर नायक चंदन की विचारधारा को पुष्टि देने का काम करती है।

3.3.2.3 सामाजिक परिवर्तनवादी विचारधारा की समर्थक :

रजनी सामाजिक परिवर्तन तथा समताधिष्ठित समाज की पक्षधर है। वह कहती है कि "अपने स्वार्थ की खातिर दूसरों को वलि बनाना तो उचित नहीं है। किसी को मूर्ख बनाकर धोखे में रखकर अथवा जबरदस्ती से अधिक समय तक उसका शोषण नहीं किया जा सकता। व्यक्ति हो या वर्ग सब स्वतंत्र और स्वावलंवन का जीवन जीना चाहते है अभाव और शोषण का जीवन कोई जीना नहीं चाहता।"[35] अत: उक्त कथन रजनी के परिवर्तनवादी विचारधारा तथा समता, स्वतंत्रता के द्योतक है। वह मनुष्य की स्वतंत्रता पर बल देती है।

3.3.2.4 समाज सेविका :

रजनी के मन में दीन-दलितों के प्रति दया, करुणा, सहानुभूति है। वह गाँव के दीन-दुखियों की सेवा करती है। रजनी अज्ञान लोगों को शिक्षित करती है। वह दलित समाज में आत्म-सम्मान और स्वाभिमान की भावना जागृत करने के काम में रत रहती है।

3.3.2.5 मूक प्रेमिका :

प्रेम भावना मनुष्य के हृदय की अमूल्य निधि है। प्रेम व्यक्ति को सहिष्णु बनाता है। मानवी जीवन में प्रेम महत्त्वपूर्ण तत्व है। रजनी बचपन से ही चंदन के प्रति आकर्षित है। वह चंदन को मन से चाहती है, उसे अपना जीवन साथी बनाने की सोचती है। वह अपने प्रेम को शब्दों में प्रकट नहीं करती। वह चंदन तथा उसके माता-पिता को हमेशा सहायता करती रहती है। अंत में चंदन अपने उद्देश्य में सफल होने के पश्चात संकेतात्मक शब्दों में अपने प्रेम को व्यक्त करती है, कमला की मृत्यु के पश्चात उसके

बच्चे के लालन-पालन के बारें में संकेत के साथ कहती है - "पिता का प्यार तुम देना। मां का प्यार में दूँगी उसे।"[36]

अत: कहना सही होगा कि उक्त कथन इस बात का संकेत है कि रजनी चंदन से प्रेम करती है किन्तु अंत तक स्पष्ट शब्दों में इस प्रेम को व्यक्त कर नहीं सकी। वह मूक प्रेमिका की भाँति अपने मन की भावना को व्यक्त करती है। जातिय वंधन के कारण शायद उसका यह प्रेम मुक रहा है।

3.3.2.6 परोपकार की भावना :

मनुष्य का हृदय अनेक भावों का सागर है। वह दूसरों की दु:खदायक स्थिति देखकर उसके दु:ख दर्द का एहसास स्वयं कर लेता है। रजनी एक शिक्षित युवती है। वह एक साधन संपन्न परिवार के ठाकुर हरनामसिंह की इकलौती संतान है। वह दीन-दलितों के प्रति मन में सहृदयता की भावना को संजोये हुए है। वह एक दलित गरीब चंदन को हमेशा सहायता करती है। चंदन जब उच्च शिक्षा के लिए शहर चला जाता है, तो रजनी उसके माता-पिता की अपने पिता से बढ़कर देखभाल करती है। वह चंदन के सामाजिक कार्यो से प्रभावित होकर उसे समय-समय पर आर्थिक मदद भी करती है। चंदन का पिता सुक्खा रजनी के बारे में कहता है कि "रजनी ने नया जीवन दिया है हमें। फाके के कारण भूखे मर गए होते हम, यदि रजनी ने हमारी मदद नहीं की होती।"[37]

अत: उक्त कथन से स्पष्ट है कि रजनी के मन में परोपकार की भावना स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होती है।

3.3.2.7 प्रेरणादायी युवती :

चंदन के माता-पिता आर्थिक अभावों से त्रस्त होने के पश्चात अंतिम क्षणों में हार मानते हैं। वे उनके जीवन का आधार चंदन के पास जाकर रहने की सोचते हैं। किन्तु रजनी चंदन के माता-पिता को उनके वेटे के सामाजिक कार्यो की जानकारी

देती है। चंदन के कार्यो में आप से बाधा न निर्माण हो इसलिए उन्हें पुनश्च कर्मरत रहने के लिए सहयोग कर उत्साहित करती है। उन्हें संघर्षशील बनाए रखने के लिए कहती है कि "टूटकर जुड़ना ही तो जीवन है। आप हिम्मत न हारे बाबा। अपनी टूटन और बिखराव को समेटकर स्वयं को जोड़ने की कोशिश करें। आप जैसे धैर्यवान व्यक्ति को तो साहस नहीं छोड़ना चाहिए।"[38]

अत: उक्त कथन से स्पष्ट है कि रजनी के व्यक्तित्व में प्रेरणादायी गुण द्रष्टव्य है।

3.3.2.8 व्यवस्था के खिलाफ विद्रोही :

रजनी एक शिक्षित युवती है। वह सामाजिक समता, स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय इन मूल्यों की पक्षधर है। वह भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित विषमता तथा शोषक वृत्ति का विरोध करती है। वह कहती है कि "किसी व्यवस्था में दोष हो और वह उत्थान की बजाय पतन का कारण बनती हो तो उसे अवश्य बदला जा सकता है, और बदला जाना चाहिए।"[39]

अत: उक्त कथन इस बात का संकेत है कि रजनी सनातन व्यवस्था अर्थात विषमता को जन्म देनेवाली दूषित मानसिकता से ग्रस्त व्यवस्था को बदलने की समर्थक है। वह अपने विद्रोह की शुरूआत अपने घर से करके पहले अपने पिताजी की परंपरागत विषम समाज व्यवस्था की भावना को गांधीवादी विचारधारा के बलवुते पर मन परिवर्तन के साथ मिटाती है।

3.3.2.9 अन्याय-अत्याचार की विरोधी युवती :

रजनी एक परिवर्तनवादी विचारधारा की युवती है। वह समाज में व्याप्त दलित समाज के अन्याय-अत्याचार शोषण के खिलाफ संघर्षशील है। वह दलित आंदोलन से जुड़कर सामाजिक बदलाव की पक्षधर बनी है। वह स्वयं कहती है कि "अन्याय और शोषण के खिलाफ मैं भी हूँ।"[40] अत: उक्त कथन से स्पष्ट है कि रजनी

का स्वभाव अन्याय-अत्याचार के विरोधी विद्रोही द्रष्टव्य है परंतु इस विद्रोह में आतंक नहीं है, आक्रोश नहीं है।

3.3.2.10 भावुक युवती :

रजनी के व्यक्तित्व का भावुकता एक महत्वपूर्ण पहलू है। वह चंदन के प्रति स्नेहमयी है। उसके माता-पिता के प्रति भी सहृदयशील व्यवहार करती है। वह दीन-दलितों की सेवा करने में स्वयं को समर्पित करती है। वह साम्यवाद की पक्षधर बनकर समाज में स्थित विषमता को दूर करना चाहती है।

3.3.2.11 प्रायश्चित तथा पश्चतापदग्ध युवती :

रजनी मातापुर गाँव के ठाकुर हरनामसिंह की इकलौती संतान है। वह अपने पिता ने दलितों पर किये अन्याय अत्याचार के बदले पिता को दोषी मानकर स्वयं इसके लिए प्रायश्चित करने की बात अपने पिता से कहती कि "मेरे विवाह से ज्यादा जरूरी है कि आपकी गलतियों के लिए प्रायश्चित करूँ मैं और उन दलित-पीड़ित लोगों से माफी माँगकर उनके गुस्से और आक्रोश को ठण्डा करने की कोशिश करूँ जिनको आपने सताया है। आपके द्वारा किए गए अत्याचार और गुनाहों के कारण अपने माथे पर लगे कलंक को धोने का यही एक उपाय है।"[41]

उक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि 'छप्पर' उपन्यास का पात्र रजनी ने सहाय्यक पात्र के रूप में कथ्य को अर्थपूर्ण बनाने तथा कथानक को गति प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

3.3.3 सुक्खा :

सुक्खा 'छप्पर' उपन्यास का नायक चंदन का पिता है। वह मेहनत-मजदूरी करके अपने बेटे को उच्च शिक्षित बनाता है। वह अनपढ़ होकर भी शिक्षा के मानवी जीवन में महत्त्व से परिचित है। सुक्खा दलित होने के कारण प्रस्थापित व्यवस्था के सामाजिक शोषण का शिकार बना हुआ है। वह एक संघर्षशील, प्रेरणादायी

तथा प्रभावी सहाय्यक पात्र की भूमिका निभाता है। सुक्खा की चारित्रिक विशेषताओं का विवरण निम्नांकित है -

3.3.3.1 समतावादी व्यवस्था का समर्थक :

सुक्खा अनपढ़ होकर भी सोचता है कि समाज में समता हो, सभी लोग एक-दूसरे से मिल-जुलकर रहें, सभी ओर खुशहाली हो। वह स्वयं कहता है कि - "हमारी तो यही कामना है कि लोग कटूता और कठोरता त्यागकर प्रेम और सद्भाव के साथ रहें। दूसरों को सम्मान दे तथा खुद भी सम्मान के साथ जीए।"[42] अत: उक्त कथन से स्पष्ट है कि सुक्खा समाज में समतावादी विचारों को स्थापित करने की कामना करता है।

3.3.3.2 स्वाभिमानी :

सुक्खा एक स्वाभिमानी दलित सर्वहारा किसान है। वह चमार जाति का होने से सामाजिक व्यवस्था के शोषक वर्ग द्वारा प्रताड़ित है। वह स्वयं अनपढ़ है। वह दलितों के गुलामी, दारिद्रय, शोषण को उनके अज्ञान का कारण समझकर अपने बेटे को उच्च शिक्षित बनाने के हेतु शहर भेजता है ताकि चंदन शिक्षा ग्रहण करके स्वाभिमानी जीवन बीताएँ। किन्तु गाँव के सवर्णो द्वारा चंदन की शिक्षा में बाधा लाने के प्रयास किये जाते हैं। इन लोगों का विरोध करते हुए सुक्खा कहता है कि "मैं मर जाऊँगा भूखा प्राण तज दूँगा। सब कुछ बर्दाश्त कर लूँगा मैं, पर चंदन को इस नर्क में नहीं पड़ने दूँगा।"[43] अत: उक्त कथन से सुक्खा के स्वाभिमानी व्यक्तित्व का पहलू दृष्टिगोचर होता है। वह अपनी संतान को पढ़ लिखकर ऊँचे ओहदों पर विराजमान देखना चाहता है।

3.3.3.3 आशावादी :

सुक्खा आशावादी है, वह अपनी पत्नी रमिया से कहता है कि "पढ़-लिखकर वड़े वनते है सब। क्या पता हमारा चंदन भी कल को कलट्टर या दरोगा

बन जाए। अपनी चिंता छोड़ हमें थोड़े दु:ख उठाने पड़ रहें हैं, तो क्या दु:ख के बाद ही सुख आता है। हमारे दिन भी बहारेंगे कभी न कभी।"[44]

अत: उक्त कथन सुक्खा के आशावादी स्वभाव को स्पष्ट करने में सहायक है।

3.3.3.4 दृढ़ निश्चियी :

सुक्खा दृढनिश्चियी स्वभाव का व्यक्ति है। वह किसी भी स्थिति में अन्याय के आगे झुकना नहीं चाहता है। वह अपने बेटे के पढ़ाई के लिए किसी भी संकटों का सामना करने के लिए तत्पर है। वह कहता है कि "चाहे भूखे रहकर प्राण तजने पड़े मुझे। चाहे किसी फुटपाथ पर सड़कर मरना पड़े और चाहे चील कौए नोंच नोचकर खा जाए मेरी लाश को लेकिन अपने जीते-जी चंदन को इस नरक में नहीं पड़ने दूँगा मैं।"[45]

अत: उक्त कथन सुक्खा के दृढ निश्चयी स्वभाव का गवाह है।

3.3.3.5 विद्रोही :

सुक्खा गाँव के सेठ, साहुकारों तथा ठाकुर हरनामसिंह और पंड़ित द्वारा सामाजिक शोषण से प्रताड़ित दलित मजदूर किसान है। सुक्खा को खेत का लगान न चुकाने के कारण खेत से बेदखली किया जाता है। उसका घर लाला साहुकार के पास गिरवीं रखे घर पर भी वे लोग कब्जा करते हैं। अंत में वह गाँव छोड़कर दूसरी जगह रहने के लिए जाता है। इसके पश्चात कुछ ही दिनों में उसे समझता है कि लाला साहूकार ने उसके 'छप्पर' में अपने जानवरों को बाँधने की व्यवस्था की है। उसी समय सुक्खा गुस्से से कहता है कि - "किसी को क्या हक है, मेरी जमीन पर गाये बॉधने का। सेठ का कर्ज था तो क्या हुआ देर सवेर पट जाता, मैं क्या मरा जाता था। खाली पड़ा रहता मेरा 'छप्पर' पर उसमें गाये बाँधने की क्या तुक है। ...... मेरे सामने आता सेठ गाये बाँधने तो टांगे तोड़ देता उसकी......।"[46] यहाँ सुक्खा में निर्मित दलित चेतना

विद्रोह में परिवर्तित होती है परंतु सदियों से सवर्णो के दबाव में पले ये लोग दव्बू वनकर विद्रोह का केवल मंतव्य करते है।

3.3.3.6 प्रेरणादायी :

सुक्खा एक अनपढ़ दलित मजदूर किसान है। वह स्वाभिमानी, दृढ निश्चियी, समता तथा मानवता का पक्षधर इन गुणों के कारण प्रेरणादायी पात्र है। किन्तु सुक्खा इन गुणों के साथ-साथ सामाजिक दायित्व बोध से भी परिचित है। वह कहता है कि "हमारी आशाओं का केंद्र, हमारे जीवन का आधार, चंदन ही है। हमारा सब कुछ। यदि समाज को जरूरत है तो अब से चंदन को समाज के लिए छोड़ता हूँ मैं।"[47]

अत: कहना सही होगा कि सुक्खा के विचार वर्तमान समाज के लिए प्रेरणादायी है।

3.3.3.7 मानवतावादी विचारधारा का पक्षधर :

सुक्खा मानवतावादी विचारधारा का समर्थक है। वह कहता है कि "अपने लिए तो सभी करते है इंसानियत की खूबी तो इसी बात में है कि आदमी दूसरों के भी काम आए।"[48] एक-दूसरे की मदद करना मानवता की कसौटी है।जिस पर सुक्खा पूरी तरह उतरता है। उक्त कथन सुक्खा के मानवतावादी स्वभाव गुण का संकेत देता है।

अत: कहना सही होगा कि उक्त विवेचन से स्पष्ट है - 'छप्पर' उपन्यास में सुक्खा सहायक पात्र के रूप में प्रभावी चारित्रिक विशेषताओं से ओतप्रोत है। साथ ही कथानक को गति प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

3.3.4 रमिया :

रमिया एक दलित मजदूर किसान सुक्खा की पत्नी तथा उपन्यास का नायक चंदन की माँ है। वह एक आदर्श पत्नी, त्यागमयी नारी, ममतामयी माँ, जिज्ञासु वृत्ति, परिश्रमी तथा जीवनभर आर्थिक अभावों से त्रस्त संघर्षशील साहसी नारी है। अत रमिया के चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन यहाँ इस प्रकार प्रस्तुत हैं -

3.3.4.1 आदर्श पत्नी के रूप में :

संसारिक जीवन में सफलता हासिल करने के लिए पति-पत्नि के विचारों में समन्वय की भावना महत्वपूर्ण हैं। पत्नी-पति की प्रेरक शक्ति होती है इस बारे में डॉ. नीता रत्नेश कहती है कि - "पत्नी का परिवार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है, वह गृहिणी के रूप में जहाँ घर रूपी राज्य की स्वामिनी है, वही प्रेमिका, अर्धांगिनी तथा सती आदि रूपों में पति की प्रेरणादायी शक्ति रही है।"[49] 'छप्पर' उपन्यास के सुक्खा की पत्नी रमिया इन गुणों से परिपूर्ण हैं। वह स्वयं कहती है कि "मैं तुम्हारी जीवन संगिनी हूँ। तुम्हारा सुख-दु:ख मेरा सुख-दु:ख है। दोनों मिलकर सोचेंगे-करेंगे तो क्या पता हमारी तकलीफ खत्म हो जाए।"........

...... यह सोचते हो कि मैं बुढ़ियाँ हो गई हूँ और किसी काम की नहीं रही तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती मैं। पर देखों बुढ़ियाँ जरूर हूँ मैं और उम्र से गिर गई हूँ यह मेरे वश की बात नहीं है। लेकिन हिम्मत और हौसले में किसी से कम नहीं हूँ। मैं अभी भी। बड़े से बड़ा त्याग कर सकती हूँ मैं तुम्हारे लिए चंदन के बापू।"[50] यहाँ चंदन की माँ का उसके पति सुक्खा के जीवन से तदाकर होना तथा हिम्मत के साथ उनकी सहायता करना आदि को स्पष्ट वाणी दी है।

भारतीय संस्कृति में विवाहित नारी पति को अपना सर्वस्व मानती है। उक्त कथन को सार्थकता प्रदान करते हुए 'रमिया' आदर्श पत्नी, साहसी नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

3.3.4.2 कल्पनाशील या आशावादी नारी :

रमिया आशावादी नारी है। वह अपनी इकलौती संतान चंदन को भविष्य में पढ़ाई के बल पर बड़े से बड़े ओहदे पर देखने की आशा तथा कल्पना करते हुए कहती है कि "चंदन कहीं कलट्टर या दरोगा बन जाए। वह कार में घूमेंगा, बंगले में रहवेगा, लोग दुहरे होकर सलाम करेंगे उसको।"[51]

उक्त कथन से रमिया के कल्पनाशील या आशावादी विचारों को उजागर किया गया है।

3.3.4.3 जिज्ञासु :

रमिया जिज्ञासु वृत्ति की नारी है। वह अपने बेटे की शिक्षा के बारे में जानना चाहती है कि आखिर चंदन पढ़ लिखकर क्या करेगा, वह कौन-से पद पर जाएगा वह अपनी जिज्ञासा अपने पति सुक्खा के समक्ष व्यक्त करती है तब सुक्खा कहता है कि चंदन डॉक्टरी करना चाहता है। इस पर रमिया कहती है कि "ये डॉक्टरी क्या होती है, अभी कितने दिन और लगेंगे उसे डॉक्टरी करने में।"[52] इसके साथ ही जब गाँव में सुक्खा लगान का ऐलान सुनकर बेचैन होता है तब भी रमिया उनकी बेचैनी के कारण को जानने के लिए उत्सुक रहती है। अत: रमिया के स्वभाव में जिज्ञासु वृत्ति के गुण इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में द्रष्टव्य है।

3.3.4.4 त्याग की प्रतिमूर्ति :

रमिया जीवनभर आर्थिक अभावों से त्रस्त त्यागमयी नारी है। वह जीवनभर अपने पति सुक्खा के साथ भूखी-प्यासी रहकर दोपहरी तिपहरी तक कठोर परिश्रम करती है। वह हर पल अपने दु:ख दर्द को भूलकर पति तथा बेटे के उज्ज्वल भविष्य के बारे में सोचती रहती है।

अत: कहना सही होगा कि जयप्रकाश कर्दम जी के 'छप्पर' उपन्यास के नारी पात्रों में रमिया एक महत्त्वपूर्ण सहायक पात्र के रूप में दृष्टिगोचर है। वह आदर्श पत्नी के सभी गुणों से समन्वित नारी है। तथा रमिया साहसी, त्यागमयी, आशावादी प्रेरणादायी नारी है। रमिया अपने एक विशिष्ट कटघरे में रहकर अपने परिवार का उज्ज्वल भविष्य देखना चाहती है। एक गृहिणी के रूप में वह सफल नारी है। दलित, अशिक्षित नारी होकर भी उसकी समझ ऊँची है। वह व्यावहारिक जगत में अपना ऊँचा स्थान बना सकती है।

3.3.5 कमला :

कमला एक दलित मजदूर हरिया की इकलौती संतान है। वह प्रस्थापित समाज के उच्चवर्ग द्वारा बलात्कार की शिकार बनी हुई युवती है। कमला का व्यक्तित्व साहसी, प्रेरणादायी,आशावादी, त्याग, समर्पण से युक्त ममतामयी माँ इन गुणों से ओतप्रोत है। अत: कमला के चारित्रिक विशेषताओं का विवरण यहाँ इस प्रकार प्रस्तुत हैं -

3.3.5.1 प्रभावशाली व्यक्तित्व :

चंदन उपन्यास का नायक 'कमला' के प्रभावी तथा मन को मोहित करनेवाले व्यक्तित्व के बारे में कहता है कि - "पुरे संतनगर में कमला की जोड़ की युवती ढूँढे नहीं मिलेगी। यूँ तो पूरी बाढ़ सी है यहाँ लड़कियों की लेकिन ऐसी सुंदर और सुशील युवती नहीं है कोई।"[53] अत: कहना सही होगा कि उक्त कथन कमला के प्रभावशाली व्यक्तित्व अंकन में युक्तिसंगत दृष्टिगोचर होता है।

3.3.5.2 प्रेरणादायी :

कमला एक शोषित नारी है। वह समाज के उच्चवर्गीय लोगों द्वारा शारीरिक शोषण अर्थात बलात्कार की शिकार हुई है। वह बलात्कार के पश्चात जन्में बच्चे का पालन करती है। तथा मेहनत-मजदूरी करके स्वाभिमानी जीवन वीताने लगती है। वह उस बच्चे को पढ़ा-लिखाकर उस पर हुए अन्याय, अत्याचार के खिलाफ डट्कर विरोध करने के लिए स्वयं को तैयार करना चाहती है। वह चंदन के दलित आंदोलन में सम्मिलित होकर समाज सेवा भी करने का निश्चय करती है। कमला के इन विचारों से चंदन प्रभावित होकर कहता है कि "जब कमला युवती होकर शोषण और अत्याचार के खिलाफ लड़ सकती है, तब पुरूषों को इस संघर्ष में और ज्यादा आगे आना चाहिए।"[54] अत: कहना सही होगा कि इस उपन्यास का नारी 'कमला' एक प्रेरणादायी है। अवैध मातृत्व और अवैध बच्चे का बोझ संभालने का उसका साहस प्रशंसनीय है।

3.3.5.3 त्याग, बलिदान तथा समर्पण की भावना :

कमला का व्यक्तित्व त्याग, बलिदान तथा समर्पण की भावना से परिपूर्ण है। वह एक दलित नारी है जो सामाजिक शोषण से प्रताड़ित है। वह अन्याय, अत्याचार के विरोधी आवाज उठाती है। कमला चंदन के सामाजिक विचारों तथा कार्यो से प्रभावित होकर स्वयं कहती है कि "यदि कभी आवश्यकता पड़ी तो आपके सम्मान की रक्षा अपने प्राणों पर खेलकर भी करूँगी मैं।"[55] एक दिन चंदन जनसभा को संबोधित करके मंच से उतर रहा था कि अचानक समाज विरोधी और दूषित मानसिकता वाले व्यक्ति ने चंदन को जान से मारने की नियत से सिर पर लाठी से प्रहार किया। चंदन के सिर पर लाठी आते देखी कमला ने तो चीते जैसी फूर्ती से एक झटके से चंदन को धकेल कर स्वयं के सिर पर लाठी का प्रहार झेल लिया। वही पर कमला की मौत हुई। अत: कहना सही होगा कि कमला का व्यक्तित्व त्याग, बलिदान तथा समर्पण की भावना से ओतप्रोत है।

3.3.5.4 आशावादी नारी :

कमला आशावादी नारी है जो अपने पर हुए बलात्कार के पश्चात बच्चे का पालन करके उसे शिक्षित बनाकर अन्याय के खिलाफ डटकर मुकाबला करने की सोचती हुए कहती है कि "अब यही मेरा सहारा है। बड़ा होकर यह मेरे साथ हुए जुल्म और अत्याचार का बदला ले यही मेरी कामना है।"[56] अत: कहना सही होगा कि उक्त कथन कमला के आशावादी स्वभाव का संकेत है।

3.3.5.5 मातृवात्सल्यमयी नारी :

कमला पर हुए बलात्कार के पश्चात वह बच्चे का पालन करती है क्योंकि वह स्वयं कहती है कि "पहले मैने सोचा कि वह गंदगी है और इस गंदगी को कहीं फेंक दूँ लेकिन ममता के मोह ने रोक लिया मुझे और नहीं कर पाई मैं।"[57]

अत: कहना सही होगा कि कमला ममतामयी मातृवात्सल्यमयी नारी के

गुण से ओतप्रोत है।

3.3.5.6 कुआरी माँ की यातना :

कमला बलात्कारित दलित नारी है। वह अपने बच्चे को माँ की ममता के कारण पालन करते हुए जीवन बीताती है। जब चंदन कमला के पति के बारे में जानना चाहता है तो कमला कहती है कि "उफ्। ...... आपको कैसे समझाऊँ बाबू साहब कि मेरी शादी नहीं हुई, मैं कुआरी हूँ।"[58]

उक्त कथन से स्पष्ट है कि कमला बिन ब्याही बच्चे की माँ है जो जीवन भर घुट्न तथा यातना भरी पीड़ा से त्रस्त रहती है। कुँआरी माता की पीड़ा 'मुझे चाँद चाहिए' इस उपन्यास में भी पढ़ने को मिलती है। कुसुम अंसल के उपन्यास की अधिकतर नायिकाएँ कुँआरी माता की पीड़ा को झेलती है। इससे युग बदलाव तथा युग परिवर्तन की झाँकी देखने को मिलती है।

3.3.5.7 सौंदर्य के कारण प्रताड़ित नारी :

कमला अपने ऊपर हुए अन्याय-अत्याचार, बलात्कार तथा बर्बादी के कारण को स्वयं के सौंदर्य को दोष देती हुई कहती है कि "मेरा दोष यही था कि मेरा रंग दूसरी लड़कियों से थोड़ा बहुत साफ-सुथरा था और मेरे नाक-नक्श दूसरी लड़कियों से थोड़े अच्छे थे। काश मैं बदसूरत होती तो कम से कम मेरा जीवन तो बर्बाद नहीं होता।"[59]

दलित नारी के शोषण के विविध आयामों में उसका सौंदर्य भी कारण बनता है जैसे कमला एक दलित नारी सौंदर्य के कारण प्रताड़ित नारी है। सौंदर्य उसके लिए एक अभिशाप बन गया है।

3.3.5.8 अतिथि सत्कार करनेवाली नारी :

जब चंदन कमला के घर आता है तो कमला चंदन को देखकर उनका आदर करती है। वह चंदन को चाय या लस्सी का आग्रह करती है किन्तु चंदन द्वारा

कोई जरूरत नहीं है, ऐसा कहते ही कमला कहती है कि "आप मुझ गरीव की झोपड़ी तक आए हैं और मैं आपका कुछ स्वागत-सत्कार भी न कर सकूँ। यह भी कोई बात हैं।"[60] अत: उक्त कथन कमला के मन में अतिथि के प्रति आदर की भावनाओं का परिचय देता है। वह भारतीय नारी संस्कृति में स्थित अतिथ्य सत्कार की भावना को स्वेच्छा से वहन करती है।

स्पष्ट है कि 'छप्पर' उपन्यास में नारी पात्र कमला महत्त्वपूर्ण गौण पात्र के रूप में कार्यरत है। वह शोषित, साहसी, त्यागमयी, प्रेरणादायी नारी के रूप में अपना महत्त्व रखती है।

3.3.6 हरिया :

हरिया 'छप्पर' उपन्यास में एक दलित गरीब मजदूर है। वह प्रस्थापित समाज व्यवस्था के शोषक वर्ग द्वारा सामाजिक शोषण का शिकार बना हुआ है। वह शहर में संतनगर के जे.जे.कालोनी में एक झोपड़ी में रहती है। अत: हरिया के चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन यहाँ पर इसप्रकार प्रस्तुत हैं -

3.3.6.1 सहयोगी :

हरिया शहर के संतनगर के जे.जे. कालोनी में एक झोपड़ी में रहता है। जब मातापुर गाँव के एक गरीब मजदूर किसान का लड़का उच्च्य शिक्षा के लिए शहर आता है तब हरिया उसे अपने घर में रहने के लिए जगह देता है। वह चंदन की आर्थिक मदद भी करता है। हरिया चंदन से कहता है कि - "तुम यहाँ रहो बेटा, जब तक तुम्हें रहना है। जब तक तुम्हें इस शहर में रहना हैं। मेरे ही घर में रहों यही खाओं-पीओं। किसी तरह की कोई परेशानी हो तो बताना।"[61] अत: उक्त कथन से स्पष्ट है कि हरिया के स्वभाव गुण में सहयोग की भावना दृष्टिगोचर है। वह अपने जैसे मजदूर के होनहार बच्चें की पढ़ाई में आशावादी दृष्टिकोण के साथ सहायता करता है।

3.3.6.2 प्रेरणादायी :

हरिया इस उपन्यास का एक अनपढ़ गरीब दलित मजदूर पात्र है। वह स्वयं अनपढ़ होकर भी चंदन को पढ़ाई के लिए निरंतर प्रोत्साहित करता है। वह चंदन से कहता है कि "पढ़ो बेटा, पढ़ो पूरी मेहनत से पढ़ो। मन लगाकर पढ़ो ऊँची तालीम पाओं और बड़े हौदे तक पहुँचो।"[62]

अत: उक्त कथन से स्पष्ट है कि हरिया ने जव भी चंदन की शिक्षा में बाधा उत्पन्न हुई उसे मदद की तथा ढाँढ़स दिया उसका हौसला बढ़ाया। इससे हरिया एक प्रेरणादायी पात्र के रूप में दृष्टिगोचर है। हरिया की प्रेरणादायी प्रवृत्ति आदर्शवादी है, कारण स्वयं अभावग्रस्त होकर भी वह चंदन की सहायता करता है।

3.3.6.3 विद्रोही :

हरिया दलित मजदूर होकर भी विद्रोही स्वभाव का व्यक्ति है। जव उसकी इकलौती संतान उच्चवर्ग द्वारा बलात्कारित होती है और उसे न्याय माँगने पर कानून द्वारा मार-पीट की जाती है। तब हरिया अत्याचारित मालिक के सिर में गड़ासा से प्रहार करके उसका खून करता है। इससे हरिया की विद्रोही वृत्ति द्रष्टव्य होती है। हरिया भले ही दलित मजदूर हो फिर भी सवर्णो द्वारा उसकी बेटी की अस्मत को लुटना उसे उचित नहीं लगता है। वह अपनी अस्मत की लूट को नहीं देख सकता है। इसलिए वह उन्हें मौत के घाट उतारता है।

3.3.6.4 सामाजिक दायित्व के प्रति सजग :

हरिया एक अनपढ़ व्यक्ति है। वह चंदन के दलित आंदोलन तथा सामाजिक कार्यो से प्रभावित होता है। वह चंदन से समाज का महत्त्व समझकर कहता है कि - "मैं अनपढ़ और ऊर्जा हिन बूढा तुम्हारे इस महान संघर्ष में तुम्हारे साथ नहीं चल सकता लेकिन मेरा भी तो यह नैतिक कर्तव्य है कि मैं भी कुछ करूँ।"[63] अत: हरिया चंदन के दलित आंदोलन में सहभाग लेकर दलितों के उद्धार के सामाजिक कार्यो मे

जुड़ता है। अर्थात उक्त कथन हरिया के सामाजिक दायित्व बोध की प्रवृत्ति को उजागर करता है।

3.3.6.5 भावुक तथा सहृदय :

हरिया की एकमात्र संतान एक कमला नामक लड़की थी जो उसके पत्नी की असमय मृत्यु के पश्चात उसके जीवन का आधार तथा आशा थी। वह कहता है कि - "मैं ही उस बच्ची की माँ और बाप था। हर समय उसको अपने सीनें से लगाए फिरता और गर्मी-सर्दी से बचाने के सौ-सौ उपाय करता। तनीक छींक आ जाती उसे तो बेचैन हो उठता था मैं।"[64]

अत: उक्त कथन हरिया के भावुक स्वभाव पर प्रकाश डालता है। स्पष्ट है कि 'छप्पर' उपन्यास में एक गरीब दलित मजदूर पात्र के रूप में हरिया उपन्यास के नायक को सहाय्यक पात्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। वह इस उपन्यास का विद्रोही, प्रेरणादायी, भावुक, कर्तव्यदक्ष तथा सहयोगी स्वभाव का पात्र है।

3.3.7 ठाकुर हरनामसिंह :

ठाकुर हरनामसिंह मातापुर गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। उनका जीवन मान-सम्मान तथा सुख-सुविधाओं से संपन्न है। गाँव तथा इलाके भर के सभी बड़े लोग, पुलिस, दरोगा, तहसीलदार, जिलाधिकारी इन्हें मान-सम्मान देते है। उनके बड़े-बड़े राजा-महाराजा के साथ ताल्लुकात हैं। वे स्वार्थी, शोषक वृत्ति, सनातन व्यवस्था के समर्थक है। ठाकुर हरनामसिंह के चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन यहाँ इस प्रकार प्रस्तुत हैं-

3.3.7.1 शोषक वृत्ति :

ठाकुर हरनामसिंह मातापुर गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है। वे संकुचित सवर्ण मानसिकता के रूढ़ि-परंपरा आदि विचारों के वाहक है। वे दलित समाज का शोषण करना अपना अधिकार मानते है। वे कहते है कि "अपने अस्तित्व को बनाए

रखने के लिए अपना हित देखने की जरूरत है, जीवन का व्यावहारिक सच यही है। इसलिए अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए दूसरों को दबाए रखना जरूरी है।"[65]

अत: कहना सही होगा कि उक्त कथन इस बात का संकेत है कि ठाकुर हरनामसिंह के विचार शोषक प्रवृत्ति के पोषक तथा समर्थक हैं।

3.3.7.2 स्वार्थी प्रवृत्ति :

ठाकुर हरनामसिंह के व्यक्तित्व में स्वार्थी भावना का गुण परिलक्षित है। वे कहते है कि "यदि सब चमार चूहडे पढ़-लिख जाएँ और सब के सब बाहर जाकर नौकरी करने लगेंगे तो कल को हमारे खेतों और घरों में कौन काम करेगा।"[66]

अत: उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि ठाकुर हरनामसिंह अपने स्वार्थ हेतु दलित समाज को शिक्षा के साधनों से दूर रखकर उन्हें अज्ञान के साए में जीने के लिए बाध्य करना चाहता है क्योंकि उनकी गुलामी यह समाज हमेशा करें। अर्थात ठाकुर हरनामसिंह स्वार्थी वृत्ति के व्यक्ति है। वह अपने फायदे के लिए दूसरों को उनके हक्कों से दूर रखना चाहते है।

3.3.7.3 सुख-सुविधाओं तथा साधन संपन्नतापूर्ण जीवन के भोक्ता :

ठाकुर हरनामसिंह सुख-सुविधाओं तथा साधन संपन्नता के जीवन के अकेले मालिक थे। उनके बारे में कहा जाता है कि "कई सौ एकर की जमींदारी थी उनकी। ट्रैक्टर-टयूबवैल, गाय-बैल, नौकर-चाकर हर चीज की रेल-पेल सी थी उनके यहाँ।"[67] अत: उक्त कथन ठाकुर हरनामसिंह के सुख-सुविधाओं तथा साधन संपन्नतापूर्ण जीवन के भोक्ता पर प्रकाश डालने में युक्ति संगत दृष्टिगोचर हैं। वे सारी सुविधाओं के भोक्ता बनकर दलित समाज को उन सुविधाओं से दूर रखना चाहते हैं।

3.3.7.4 सनातन व्यवस्था के समर्थक :

ठाकुर हरनामसिंह उच्चवर्ग में जन्म लेने के कारण संकीर्ण सवर्ण मानसिकता के वाहक तथा समर्थक हैं,अपनी बेटी रजनी द्वारा उनके विचारों तथा

आचारों का विरोध करने पर वे कहते है कि - "अपनी ओर से क्या किया है मैंने? कुछ भी तो नहीं।परंपराओं का पालन किया मैंने, सो व्यवस्था के साथ जिया हूँ मैं तो बस्स!"[68]

अत: स्पष्ट है कि उक्त कथन ठाकुर हरनामसिंह पर हुए सनातन व्यवस्था के संस्कारों के द्योतक है। वे इस व्यवस्था के दास बनकर जीना चाहते हैं।

3.3.7.5 पश्चतापदग्ध :

ठाकुर हरनामसिंह जीवन भर दलित समाज के अज्ञानी लोगों का शोषण करते आ रहे हैं। किन्तु वे उनकी इकलौती शिक्षित संतान रजनी के मानवता, समता, स्वतंत्रता, न्याय इन विचारों से प्रभावित होकर अपने जीवन में किये अवैध व्यवहारों पर पछताते हैं। वे स्वयं को धिक्कारते हुए कहते है कि "मेरे कर्म मुझे धिक्कारते है।"[69] अत: उक्त कथन उनके पश्चताप को स्पष्ट करते है। यहाँ लेखकने अम्बेड़करवादी विचारधारा के बल पर दुष्टता करनेवालों के मन में परिवर्तन कर दिया है।

3.3.7.6 जीवन की व्यथा तथा पीड़ा :

ठाकुर हरनामसिंह मातापुर गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है।उनका जीवन सुख-सुविधाओं तथा साधन संपन्नतापूर्ण है। किन्तु उनके पत्नी की असमय मृत्यु से उनका जीवन दु:खद व्यथा-कथा बनता है क्योंकि उन्हें एक इकलौती संतान रजनी बेटी है। उनके जीवन का आधार तथा आशा सब कुछ वही है। इस बेटी के पश्चात उन्हें एक और बेटे की आशा थी जो जीवन में पूरी न हो सकी इससे त्रस्त है।

अत: स्पष्ट है कि 'छप्पर' उपन्यास का ठाकुर हरनामसिंह गौण पात्रों में महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में कार्यरत दृष्टिगोचर है। वह खलनायक के रूप में पाठकों के सामने उभरता है, अपनी छली प्रवृत्ति के कारण सामान्य दलितो को पीड़ा पहुँचाता है परंतु अंत में पश्चातापदग्ध बनकर अपने को दोष देता है।

3.3.8 काणापंडित :

काणा पंडित का असली नाम श्रीराम शर्मा है। बचपन में ही चेचक में उसकी एक आँख चली गई है तब से उसे लोग 'काणाराम' कहते हैं। तीसरे दर्जे तक पढ़ा है काणाराम। पंड़ित पुरोहिताई का पुश्तैनी धंधा करके धार्मिक अनुष्ठानों के नाम पर जो कुछ किया कराया जाता है, काणाराम भी वह सब सीख लेता है। थोड़े से संस्कृत के श्लोक भी कंठस्थ कर लिए है उसने। पिता की मृत्यु के पश्चात उसने आजीविका के लिए यही पैतृक धंधा चुना है। इसके सिवाय और कर भी क्या सकता है वह। पढ़ा-लिखा इतना नहीं कि कहीं नौकरी पा जाता और नौकरी के अलावा न मेहनत-मजदूरी, या कोई अन्य कार्य करना, ब्राह्मण होने के नाते न तो उसके लिए सम्मान की बात है और न ही सुविधाजनक। किसी और मुल्क या गैर जाति में पैदा हुआ होता तो भूखा मरता काणाराम।"[70]

अत: कहना सही होगा कि 'छप्पर' उपन्यास का पात्र काणापंडित के चारित्रिक विशेषताओं का उपर्युक्त प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट होता है कि वह उस वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है जो जन्मत: स्वयं को श्रेष्ठ मानकर अपने से नीचे अज्ञानी लोगों का शोषण करते हैं। अर्थात वे स्वार्थी वृत्ति, शोषकप्रवृत्ति का नेतृत्व करते हैं। जिसका यथार्थ अंकन 'छप्पर' उपन्यास में जयप्रकाश कर्दम जी ने वखूवी किया है।

'छप्पर' उपन्यास में गौण पात्रों में नन्दलाल, रतन, रामहेत, लाला साहुकार आदि पात्रों का केवल नामोल्लेख आया है। ये पात्र कथानक को गति प्रदान करने में सहाय्यक पात्रों के रूप में दृष्टिगोचर हैं।

निष्कर्ष :

जयप्रकाश कर्दम जी के 'करुणा' तथा 'छप्पर' विवेच्य उपन्यासों की पात्र योजना उनके उद्देश्यपूर्ति में सुसंगत दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने जिस युग के परिवेश को प्रस्तुत उपन्यासों में रेखांकित किया है उसी के अनुरूप पात्रों का चित्रण मफलता के माथ

किया है। विवेच्य उपन्यासों के अधिकतर पात्र मानवीय संवेदनाओं को स्पर्श करते हुए सामाजिक जीवन के यथार्थता को उजागर करने में सक्षम हैं। इन्होंने विवेच्य उपन्यासों के मुख्य पात्रों द्वारा समता, स्वतंत्रता, बंधुता, न्याय इन मानवतावादी मूल्यों को प्रस्तुत करके सामाजिक परिवर्तन की माँग की है। जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों के पात्र समाज को पथ-निर्देशन तथा प्रेरणादायी ही नहीं बल्कि सामाजिक क्रांति के प्रतीक हैं। इन उपन्यासों के अधिकांश पात्र अपने व्यक्तित्व से पाठकों को प्रभावित करके उनमें वैचारिक जागृति का दीप-प्रज्वलित करते हैं।

विवेच्य उपन्यासों के नायक समाज सुधारक के रूप में समाज विरोधी प्रवृत्ति के पात्रों से जुझते हैं। विवेच्य उपन्यासों के दोनों नायक रमेश और चंदन दलित समाज से उत्पन्न हुए हैं और दोनों गौतम बुद्ध, डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर, महात्मा फुले, राजर्षि शाहू महाराज तथा कार्ल मार्क्स की विचारधारा को अपनाते हुए दलित समाज प्रबोधन का भरसक प्रयत्न करते हैं। वे क्रांति के हिमायती जरूर हैं परंतु सवर्ण समाज के दबाव में उनकी क्रांतिकारी भावनाएँ बीच-बीच में दबी हुई हैं। वे समता चाहते हैं, बंधुत्व का अनुपालन करने का संदेश देते है, स्वतंत्रता की पुकार करते हैं और सामाजिक परिवर्तन की माँग करते हैं। दोनों नायक शिक्षित हैं और शिक्षा के बल पर ही समाज विकास होता है, इस पर बल देते हैं दोनों नायकों की पारिवारिक परिस्थिति दुर्बल एवं अभावग्रस्त हैं, दोनों अर्थाभाव से पीड़ित होकर भी फिनिक्स पंछी की भाँति उर्ध्वगामी बनकर केवल खुद को ही नहीं बल्कि सारे दलित समाज में विकास की चेतना भरते हैं। रमेश का संघर्ष धामपुर गाँव के सुखदेवसिंह तथा उनके बेटे के साथ है तो चंदन का संघर्ष मातापुर के प्रतिष्ठित धनाढय ठाकुर हरनामसिंह से है, तो वे दोनों इन ठाकुरों की शोषण एवं अन्यायी वृत्ति से दलितों को न्याय देने का प्रयत्न करते है। रमेश मात्र ठाकुर के बेटे की साजिश के कारण जेल में बंदी बनता है और वहाँ के कैदियों का संगठन करके क्रांति का नारा लगाता है। परन्तु 'छप्पर' का चंदन मात्र अम्बेड़करवादी

विचारधारा से ठाकुर हरनामसिंह की बेटी रजनी के माध्यम से हरनामसिंह के मन में परिवर्तन कर सकते हैं। दोनों उपन्यास की नायिकाएँ करुणा और रजनी सवर्ण समाज से उत्पन्न होकर भी दलित युवकों के प्रति अपना मानसिक खिंचाव रखती है। 'करुणा' उपन्यास की करुणा रमेश से अव्यक्त प्रेम रखकर उसके कार्य में मदद करने के लिए भिक्षुणी बनकर बौद्ध धर्म के सिद्धांतो का प्रचार और प्रसार करके विश्वशांति का नारा लगाती है तो छप्पर की रजनी चंदन के समाज प्रबोधन के कार्य में उसकी ठौर-ठौर पर मदद करती है तो दोनों उपन्यास की नायिकाएँ मानवतावादी धर्म की पुरस्कर्ता हैं।

विवेच्य दोनों उपन्यास में कई खली और दुष्ट प्रवृत्ति के पात्र भी आये है। 'करुणा' में सूरज उसके पिता ठाकुर सुखदेवसिंह, रघुनाथ तिवारी और 'छप्पर' उपन्यास में काणापंडित, ठाकुर हरनामसिंह जैसे खली प्रवृत्ति के पात्र है जो रमेश और चंदन के जीवन में अनेक रोडे खड़े करके खुद का उल्लू सीधा करते हैं।

विवेच्य दोनो उपन्यास के पात्र दलित हैं और दोनों नायिकाएँ सवर्ण हैं। उन नायिकाओं के मन में दोनों दलित नायकों के प्रति मुक प्रेम हैं, परंतु जातिय वंधनों के कारण वे ये प्रेम प्रकट नहीं कर सकती बल्कि उदारता से नायकों की सहायता करके उनके मार्ग को प्रशस्त बनाती हैं। मराठी में ना.सी.फडके और वि.स.खांडेकर के साहित्य में ऐसे भिन्न वर्गीय और भिन्न जातीय नायक और नायिकाएँ देखने को मिलती है। फडके और खांडेकर के साहित्य में जो कलावादिता देखने को मिलती है, वही कलावादिता के दर्शन हमें कर्दमजी के आलोच्य दोनों उपन्यासों में देखने को मिलती है। विवेच्य उपन्यासों के नारी पात्र नारी जीवन के कटघरे में रहकर भी समाजहितैषी हैं।

'छप्पर' उपन्यास का सर्वहारा मजदूर पात्र हरिया और सुक्खा मानवतावादी है, जो अशिक्षित होकर भी दलितों की शिक्षित पीढी को प्रेरणा देते है। इस उपन्यास में बलात्कार ग्रस्त नारी कमला अवैध संतान को स्वीकार करके कुँआरी माता वनने का साहस वनाये रखती है। ये सारे पात्र परिवेश की उपज लगते है और अपनी

चालचलन के माध्यम से युगबोध को स्पष्ट करते है।

विवेच्य उपन्यासों के पात्रों में रोमँटिकता के दर्शन नहीं होते हैं इसका कारण यह हो सकता है कि विवेच्य उपन्यासों के नायक और नायिकाएँ आदर्शवादी पात्र हैं। वे कर्तव्य के पिछे लगे हुए हैं। कर्तव्यपूर्ति उनके जीवन का मूल लक्ष्य हैं और जो कर्तव्यतत्पर होते हैं उनसे रोमँटिकता दूर रहती है। परिणामस्वरूप दोनों उपन्यासों में रोमँटिकता के दर्शन नहीं होते।

संदर्भ संकेत :

1.	डॉ.प्रतानारायण टण्डन	-	'हिंदी उपन्यास कला'	पृ. 209
2.	डॉ.शांतिस्वरूप गुप्त	-	'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त'	पृ. 366
3.	डॉ.जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.3
4.	वही	-		पृ.59
5.	वही	-		पृ.16
6.	वही	-		पृ.19
7.	वही	-		पृ.18
8.	वही	-		पृ.11
9.	वही	-		पृ.65
10.	वही	-		पृ.63
11.	वही	-		पृ.11
12.	डॉ.यादवराव धुमाळ	-	"साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक तुलनात्मक अनुशीलन"	पृ.220
13.	डॉ.जयप्रकाश कर्दम	-	'करुणा'	पृ.28
14.	वही	-		पृ.53
15.	वही	-		पृ.26
16.	डॉ.जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.78
17.	वही	-		पृ.69
18.	वही	-		पृ.18
19.	वही	-		पृ.17

20.	वही	-	पृ.97
21.	वही	-	पृ.50
22.	वही	-	पृ.40
23.	वही	-	पृ.68
24.	वही	-	पृ.78
25.	वही	-	पृ.31
26.	वही	-	पृ.79
27.	वही	-	पृ.41
28.	वही	-	पृ.46
29.	वही	-	पृ.71
30.	वही	-	पृ.101
31.	वही	-	पृ.69
32.	वही	-	पृ.41
33.	वही	-	पृ.62
34.	वही	-	पृ.83
35.	वही	-	पृ.65
36.	वही	-	पृ.119
37.	वही	-	पृ.105
38.	वही	-	पृ.96
39.	वही	-	पृ.82
40.	वही	-	पृ.106
41.	वही	-	पृ.91

42.	वही	-		पृ.100
43.	वही	-		पृ.35
44.	वही	-		पृ.9
45.	वही	-		पृ.61
46.	वही	-		पृ.61
47.	वही	-		पृ.98
48.	वही	-		पृ.98
49.	डॉ.नीता रत्नेश	-	'भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी'	पृ.110
50.	डॉ.जयप्रकाश कर्दम	-	'छप्पर'	पृ.26
51.	वही	-		पृ.9
52.	वही	-		पृ.8
53.	वही	-		पृ.45
54.	वही	-		पृ.51
55.	वही	-		पृ.75
56.	वही	-		पृ.50
57.	वही	-		पृ.50
58.	वही	-		पृ.47
59.	वही	-		पृ.50
60.	वही	-		पृ.46
61.	वही	-		पृ.14
62.	वही	-		पृ.74

63.	वही	-	पृ.56
64.	वही	-	पृ.72
65.	वही	-	पृ.66
66.	वही	-	पृ.65
67.	वही	-	पृ.62
68.	वही	-	पृ.90
69.	वही	-	पृ.111
70.	वही	-	पृ.31